

DPN 6732

चानक्य सार संग्रह CĀNAKYA SĀRA SAṆGRAHA

Title :

Run. No. 7457

Cat. No. 50

Micro. No.

Subject Ethics.

Religion : Hindu / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt.- New. / Maith.- New. / New.- Nep. /

Size in cms. 32 x 13

Folios 35 Lines (in a page) 9

Compl. / Incompl.

missing 1, 22,
Chapt. / act /

Author / translator चानक्य Cānaka

Scribe / donor

रामहरि पादया

Date: NS / SS / VS / KS 1915

Ruler / place

Rama Hari Padhya.

Script : New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. :

Material : palmleaf / paper / thyasaphu /

Condition : fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

Folio 2. मुखं सिध्यो पदे सेरा दुष्टास्त्रि भरणेन च
द्विषतां संप्रयोगेरा पांडितो मे वसिदति ॥ ॥

P. T. O.

८७. ईति श्री चानके सार संग्रहे तृतीय सत्तक समाप्तं ॥ ३ ॥

सम्बत् १९१५ साल मिति मंशिर सुदि १९ रोज मा गो पोस्तक लेखमा
रामदरि पाध्या सुद्धो वा असुद्धो मम दोष न दियते शुभम् ॥ ॥

भुतभविष्यवर्तमानजान्यातस्थेगरिउमातिसलेजानला ॥६॥ मुखसिष्योपदेसेरादुष्टुरिभररोन
 य॥ द्विषतांसंप्रयोगेरापंडितोपेवसिदति ॥ मुखसिष्योत्ताईउपदेसनदिनुदुष्टस्वादिनलाईवखः
 आभरनदिनुसेकादिगाविगुहभयाकासवुसंगमितनुयेतिगयापंडितभयापनिनासहोला ॥७॥ गु
 निमित्तसहसंपर्कपंडितैसहसंकथा ॥ कुलभिषमभिभवंकुर्वीनोनावसिदति ॥ पुसंगगर्नुगुनिक
 संगकुरागर्नुजानिसंगमितगर्नुकुलवंतसंगयेसोगर्न्याकोदुष्टाहुदैन ॥८॥ उन्मत्ताजामुजंगाना
 मद्वयानावदतिना ॥ शिवराजकुलानांयविष्वसंतिगतायुष ॥ वोलाहासर्पमतवाराहातिअ
 श्विजातिराजारेतिसंगविष्वसगयादेपिजिवजानलाईवेरहुदैन ॥९॥ वैरिनासहविष्वसंयो
 नरकर्तुमिच्छति ॥ सवृत्तागेषुसंप्रपत्तिनपुतिबुध्यते ॥ जोमनुष्यलेसवृत्तितविष्वसगहंस
 धकादुपामायहिमुत्पाजस्तोहंछतसभयीलेरुषवाटस्यार्पाहंजागला ॥१०॥ धनधान्य

प्रयोगे राविश्रासंगुहरोषु ॥ ग्राहारे व्यावर्तौ हारेषु त्याक्तं जलजासदाभवेत् ॥ धनकमाउनुं दारवे
 निकिसानगदीविश्रासिकदाति यादियागदीलाउदाकुलाधारगदीयेतिथौ कमात्ताजनमौनु ॥ ६॥
 नगुरुसदसिमातानगुरुसदसिपिता ॥ येस्तारेतिमाहाधोरसंसारोदधिदुस्तरं ॥ गुरुसमानवायु रम
 परिणहोर्नमहत्तारिफनिहोर्नगुरुलेसंसारपारटराउद्धंआमावावुभंदागुरुवडाहुं ॥ १०॥ मातागं ॥ २॥
 गासमोतिर्यपितापुस्करिमेवय ॥ गुरुकेदारसमोतिर्यमातागंगापुनपुगा ॥ महत्तारिगंगावरोवर
 वावुपुस्करिनिर्धवरोवरगुरुकेदारनिर्धवरोवरमहत्तारिजंमजंमकिगंगा ॥ ११॥ विश्राहपंकुरुपाणां
 स्वेमाहपंतपवितां ॥ कोकिलानास्यरूपं तारिरूपं पतिवृता ॥ कुरुपिकोरूपविश्रातपविताकोरूप
 स्वेमाकोकिलपविताकोरूपस्यरिद्रि कोरूपपतिवृताहो ॥ १२॥ नयविश्रासमोवंधुनयव्याधिसमाहि
 पु ॥ नयापतनेसमद्वेहोरावदैवांपरंवरं ॥ संगनमाहाकोहुलोसंगविश्रासनुमाहाकोसरोराधि

यारोमाहाकोहुलोपियारोहोराहोरिवलियामाहाकोवलियाविधाताहो ॥ १३॥ विश्रापुवासिनोमित्रं
 भायीमित्रंगहेषुय ॥ आनुलस्योषहंमित्रंधर्ममित्रंपरत्रय ॥ परदेसकोमित्रभन्याविश्रागृहेको
 मित्रभन्याअरिहोरोगकोमित्रभन्याओषधिहोपरदेसकोमित्रधर्महो ॥ १४॥ दुराधिताविधंवि
 श्राअर्जिगंभोजनेविष ॥ विषंगोष्टिदरिद्रस्यबुधस्यतहनिविष ॥ धेरैदिनछायाकोविश्राआ
 याकोभयापनिविषहंछनपयादेविषयाकोअंनपनिविषहंछदरिद्रजनताहुंदाज्युभाईवि
 षहंछवुढालाईतहरिआद्यादिनिविषहंछन् ॥ १५॥ अनाभ्यासैहताविश्रातिस्यहासैहतारिचय ॥
 कुर्वियेराहतंरोत्रपुत्यदोषैहानुप ॥ अभ्यासछायापलाकोविश्राकोनासहंछवहुनैह
 स्याकोरिवकोनासहंछकुहाउमावियेरास्यासंतानकोनासहंछकुमांविभयाराजाकोराय्यनास
 हंछ ॥ १६॥ यस्यपुत्रोरायेविद्यासोनसुरेनयपंडिता ॥ अंधकातंकुलंतस्यनसायंदैवसर्वरि

जस्को छोरो ता निहैन सु रोहै लपंडित हैन तस्को कुल अंधा रोविना यंदु मा कारा विजस्तो ॥ १७ ॥ सर्व
 रिदिपक त्वं वंदे प्रदु प्रभाते रविदिपक ॥ त्रैलोक्यादिपको धर्म सुपुत्र कुलदिपक ॥ ॥ रात्रिकोदिप ये
 दु मादिन कोदिप सूर्य कुल कोदिप सुपुत्र विभुवन कोदिप धर्म हो ॥ १८ ॥ जनेता यो पनेता यो यस्तु वि
 शोपये हति ॥ अनदाता भयदाता पंथे ते पितरस्मृता ॥ ॥ वावुससुरा गुरु भोक माषा नदिन्या भयमा राम
 रसाग र्साई पाव जता वावु भंनु ॥ १९ ॥ गुरुपत्निराजपत्नि मित्रपत्नि तथैव व ॥ पत्नि माता स्वमा ॥ २० ॥
 तावपंथे ते मातरस्मृता ॥ ॥ गुरुकि अरि राजा कि अरि मित्र कि अरि सासु महतारि ईपाय कोटि
 महतारि भंनु ॥ २० ॥ लाल ये पंथ वर्या शिद सवर्षा शिताइ येन ॥ संप्राप्ते घोड सेवर्षे पुत्र मित्र ससाथ रे
 न ॥ ॥ जानि मनुष्य ते छोरा लार्ई पाव वर्य संमत् हं दगिरा मनुपाय वर्य देषिद सवर्ष संमरिआ
 ईवु आई मारि कुटिरा हाता उनु सो हवर्ष को छोरो हुदा वावु छोरा ते मित्र भाव गरिरहनु ये गर्नु हं

बराभर

रा ॥ २१ ॥ लादये वह वो दोषा तादयेत वह वो गुरा ॥ तस्या सुत्रं व ॥ मिष्टं यतादयेत नु लाल येन ॥ ॥ के
 टाकेटि लार्ई उमा ल्या वहुत वें गुन पहे के टाकेटि लार्ई अदप ॥ पावहुत गुरा पहे तस अर्थ ले गपानि
 जन ले छोरा लार्ई सिध्य लार्ई अदप गदैरहनु ॥ २२ ॥ रुविभास यो स्यातां प्रभासी किं प्रयोजनं ॥ ता
 पुभो यदि न स्यातां पुलायां किं प्रयोजनं ॥ ॥ जस्को पुरुनु मन पति छ अभास पति छ त बुद्धि न भया
 पति पहुता पुरुनु मं पति हैन अभास पति हैन त बुद्धि न भया पति पहुतेन ॥ २३ ॥ पुत्रास्तु विविधे
 सा र्वे नियो म्या सततं बुधे ॥ निति गो बुद्धि संपन्नो भवति धनु पुजिता ॥ ॥ गपानि जन हेरु ले छोरा हे
 रु लार्ई एक यित गरि वहुत विधि का सख माहाला उनु सख जा म्या गपानि हुं छं सवै का मां त्या हुं छं न
 ॥ २४ ॥ पठ पुत्र कि मात स्यम पठो भः रवाहक ॥ पठत पुजिते राजा पठ पुत्रो दिने दिने ॥ ॥ यात करिधि
 ले छोरा हेरु लार्ई सिका उछन हे पुत्र होरा त दिन मन लार्ई पहुन सव्या राजा कामां त्या हो जान पला

जे को वो क नु पती ॥ २५ ॥ गुरो षु किय ता य त न कि मा तो पे पु यो ज न ॥ वि किय ते न धं हा भि गा व शि र वि व
जि ती ॥ ॥ हरि पु कार गरि वि डा सि क नु सि गारि क न क्वा पु यो ज न छ ग ता मा धं ट कुं डा या ले थारि गा नु
विका उ दि न दु हरि गा र्द पो वि का र्द पो वि का उ छ त स अ र्थ ले वि गु ति मा शि स ता र्द को मा छ त स अ
र्थ ले गु रा सि क नु ॥ २६ ॥ न र स्या भ र नं रु पं रु प स्या भ र नं स्यं मां गु रा ॥ गु रा स्या भ र नं गु रा रा रा स
स्या भ र नं स्या मा ॥ ॥ म नु ष्य को ग ह ना रु पं रु प को ग ह ना गु रा गु रा को ग ह ना ग्या न ग्या न को ग ह रा स्य ॥ ६ ॥
मा ॥ २७ ॥ गु रा पृ छ सि मा रु पं सि ले पृ छ सि मा कु ले ॥ सि धि पृ छ सि मा वि डा भो गं पृ छ सि मा ध नं ॥
रु प भं दा गु रा ठ लो कु ले भं दा सि ले ठ लो वि डा भं दा सि धि ठ लो ध न भं दा सा नु षु वा उ नु दा न ग र्द लो
॥ २८ ॥ अ गु न स्या ह ता रु पं अ सि ले स्या ह तं कु ले ॥ अ सि धि पृ छ सि मा वि डा अ भो ग स्या ह तं ध नं ॥ ॥ गु
रा वि ना रु प सु हा उ दै न सि ले वि ना कु ले सु हा उ दै न सि धि वि ना वि डा सु हा उ दै न दा न भो ग वि ना ध न

सु हा उ दै न ॥ २९ ॥ गु रां भु षा ये ते रु पं सि ले भु षा ये ते कु ले ॥ सि धिं भु षा ये ते वि डा भो ग भु षा ये ते ध नं ॥
रु प को सो भा गु रा कु ले को स्व भा सि ले वि डा को स्व भा सि धि ध न को सो भा दा न भो ग ॥ ३० ॥ सु कु ले जो ज य
तु कं न्या पु रं वि डा सु यो ज य त ॥ व्या स ने र जो ज य त छ त्रं पि त्र ध र्म सु यो ज य त ॥ ॥ छो रि कु ले वं त स ग ता
ई दि नु छो रो वि डा वं त स ग ता ई दि नु स नु कु वा त ता ई दि नु पि त्र ध र्म वा त ता ई दि नु ॥ ३१ ॥ ना न्यु य सि ध रा
मे रु ना ति पि मूर सा त ले ॥ व्या व सा य स हा या ना ना ति पा रो म हो द धि ॥ ३२ ॥ उ द्र म ग या सु मे रु प र्थ न का द
वा पु ग न स किं छ स भं दु पा र यं ति ग री स किं छ पा ता त प नि पु ग न स किं छ स मु द पा र यं ति पु ग रा स किं
छ त स अ र्थ ले ग्या ति ज न ले उ द्र म ग र्द ॥ ३३ ॥ स्लो के न व त द र्धे न पा दे नै का स्य रे न वा ॥ अ व ध्या दि व स
कु र्या दा ना ध्ये य न क र्म सु ॥ ॥ अं षं डि त गरि स क्वा स क सि तो क प ह नु न स क्वा आ धा सि तो क प ह नु
उ ति प नि न स क्वा पा उ सि तो क प ह नु उ ति प नि न स क्वा दे धि ये क अ स्य र प ह नु दा न ग र्द यो रे ले धे रे

हुंछ ॥ ३३ ॥ जो ज नाराण सहजा राण वृजं न्यानिधिधिरुका ॥ अग छं वै न ते जोधिपद मेकं न गच्छति ॥ ॥ दि
 नदि रा अघंडित गरिहि द्या दे धि किमिला पनिह जारता व को स पु गं नहि दि व सिरहा ग रु ड भ या प
 नि रे क को स पु जै न ॥ ३४ ॥ स नै र र्था स नै वि द्या स नै प र्व त मा रु हा ॥ स नै ध र्म प्र का य प्र व्या दा य प्र
 स नै स नै ॥ ॥ ध न क मा उ नु वि द्या प ह नु नु कालो य ह नु ध र्म ग र्नु ई वार थो क ठि लो ग रि हुं छ ॥ ३५ ॥ ग र म
 रु ड सु व या धि द्या पु स्क रे न ध नै रा वा ॥ अ थ वा वि द्या या वि द्या य न र्थे रो प ल भे ते ॥ ॥ गुरु का से वा ॥ ३५ ॥
 ते ध न ले वि द्या र वि द्या सि न सा टि क न ते क ले रे ति वार पु का र ले वि द्या पा ई न छ ॥ ३६ ॥ ए का स्म र पु द ता
 रं यो ग रु ना धि मं स ते ॥ स्नान यो रिण स तं गृ त्वा यां डाले र द्य पि जा य ते ॥ ॥ ए क भ स्म र सि का उ न्या प नि
 गुरु भ नि मां नु गुरु क रा हे ला ग या स ये वार कु कु को यो नि मा जं स लि क न प दि यो डाले का को ष मा
 ज न्म हुं छ ॥ ३७ ॥ पु स्त क पु त्र यो धि मं ना धि तं गुरु स नि धो ॥ न सो भ ते स भा म ध्य जा ल ग र्भ ई व

रि व या ॥ ॥ गुरु छे उ न प रि क न आ फे ग रु भै पु स्त क हे रि क न प त्ना को सा र व स भा या हा सो भि त हुं दै न
 क सो भ न्या जा ल वा छे रो ज न्या उ न्या स्या धि न ज स्तो हो ॥ ३८ ॥ सिल पि से ल म ना ल स्य प दि त्थे पि
 न सं ग हा ॥ अ वो र ह र नि वि द्या पं वै ते अ स यो नि धि ॥ ॥ का ठ को का म हुं गा को का म उ धे म वि द्या ई
 वृ य ति पा य थो क अ स यो ध भ दाल भ यो वें यो रो त्ते ह र न स क दै न ॥ ३९ ॥ न हि जं म रिण जे वृ त्ते जे
 वृ त्ते गुरु मु य ते ॥ गुरु गुरु प रं यो ति पु यो द धि ध नं ज या ॥ ॥ जं न्म ले जे हो भ या ले जे हो वो ला
 उ दै न गुरु ले जे हो भ या ले जे हो छ क सो भ न्या दु द द हि या हि धि हुं लो ॥ ४० ॥ कि कु ले न वि सा ले न
 गुरु वा पु जि तो न र ॥ ध र्नु र्वे स वि सो धो पि नि गुरु किं क रि ष्य ति ॥ ॥ हुं लो कु ल मा भ न्या ले क या
 हुं छ ज स का गुरु हुं से ला ई पु जा गं छे ध र्नु र्वे रा जा का कु ल मा भ न्या प नि नि गुरु रि भ या प दि
 क या पु यो ज न छ ॥ ४१ ॥ कि कु ले न वि सा ले न वि द्या हि न स्त यो न र ॥ अ क ति नो पि वं ध या स्य दे व ते

धानपिपुजिते॥ ४१॥ लोकोत्तममाजं म्यापराक्यापु योजनछविशापलासाताकुलमाजं म्यापनिवि
 शापलापहिदेवता है मां हूं लोकले॥ ४२॥ वानार्थाय भवे विद्यायावत्यालंनगछति॥ उतिरोय
 गते पाते लोकयाकिं पुयोजनं॥ ४३॥ विद्याभयाको नाम जस्तो हो नदिनयापहि नाउको क्यापुयो
 जराछत सअर्थ विद्यानपहं याल सुभयाहि॥ ४४॥ गुणा सर्वत्र पुण्याने पितृवस्योतिरथ राम
 को॥ वासुदेवनमस्यातिवसुदेवो न तेजना॥ ४५॥ गुणभयादेधितिन लोकले पुजागर्हवावुको ॥ ४६॥
 नामयाहिदेन॥ ४७॥ गुणा कुर्वतिदुरेत्वंदुरेत्वं वसतां सता॥ केतकि गंधमाघायं स्वयंगछतिष
 दपदा॥ ४८॥ गुणा वंतसाधुजनकतिताहं हं छतपतिलोकहं हं पुं हि पुं हं केतकि फलको सुवा
 स्तेभमराजगरमाहागया है॥ ४९॥ विद्यात्वं यन्पत्वं यन्निह तुल्यपराकुम॥ सोदेसपुजितोर
 जाविद्या सर्वत्र पुजिते॥ ५०॥ विद्याको रराजाको पराक्रमहुलो छ आक्रादेसमाराजाको पुजाहुं छ

विद्यावंतलार्थसवैलेमां हूं॥ ५१॥ येकोनापिसुपुत्रेन विद्यायिक्तेन साधुरा॥ कुलपुरुषसिहेन वडे
 सोवापुकासेते॥ ५२॥ विद्यावंतजानिपुत्रयकगोहाभयापहि पुत्रकनयंदुमाभयाकारावि है नुय्यालो
 गरउहं॥ ५३॥ विद्यायाभाजनं कश्चि कश्चिद्व्यस्य भाजनं॥ उभयभाजनं कश्चि कश्चित्तोभय
 भाजनं॥ ५४॥ सोसंसारमाकोहिपुरुषविद्यावंत हं कोहिपुरुषविद्यावंत है तं कोहिकाधनपनि छ
 विद्याछयोसंसारभयाकोयस्तो छ॥ ५५॥ नमंत्रिफलितो वृक्षानमंत्रिगुलितोजना॥ सुषकाथं
 यमुर्ध्वमभिप्रतेनेवमंयते॥ ५६॥ वेसगरिफलफल्पाको वृक्षजो हं नं मुहं छ अहनफल्पाको वृक्ष
 नं मुहं देत सुक्याको काठमुर्ध्वलोकनं मुहं देत सुक्याको काठमुर्ध्वलोक सो जोहं देन॥ ५७॥ नहिह
 र्मागिरिगारिसंध्याकालेपुयोजये॥ आहारयेथुननिंदानयास्याधयेमेवय॥ ५८॥ आहारये
 थुनानिदुवाठपुजासंख्याकालमानगर्नु॥ ५९॥ शृंगाराजायने व्याधिगरभकुलसोजायते॥

लक्ष्मिकश्यसर्वायां सपाथिदायुषस्य ॥ ॥ संध्याकालमाहा आहारगर्भालोगहं हं मेथुणाद्या
 कुलगर्भहं हं सुप्तादिरिदं हं पाहगया आयुतासहं ॥ ५१ ॥ वेदवेदांगतत्त्वगजपहोमपरायन ॥
 आसिर्वेदपरोरिगते सधरागोपरीतिता ॥ ॥ वेदवेदांगतत्त्वगजपहोमपाहपुजाओं जो न्या आसिर्वेद
 दिराकराजों न्या सस्ताताराजा को प्रोहितजोग्ये हो ॥ ५२ ॥ पुण्यसिलग्यमहिपाले छिडकरों मर्विवर्जि राम
 त ॥ विधुरेवपरित्यागिसमदुषंसमसुखं ॥ ॥ बुद्धिवंत सुंदरकसे को कुठकर्मनगर्भो दुषसुषदुखव ॥ ७ ॥
 रोवरभया को रोस्ताकरा राजानुत्या उनु ॥ ५३ ॥ कुलसिलगुरोपेत सत्यधर्मपरायन ॥ पुविनय
 सतीददस्यराजाध्यासोविधियते ॥ ॥ कुलवंत सिलवंत सत्यधर्मिष्ठ यनुरावयस्यरास्यमावंत
 रोस्तापुरुषजो हंसुराहं ॥ ५४ ॥ कुतव्यसतिरांतुर्कनप्रगर्भसदाजिव ॥ अनायव्ययकर्त्तोरिना
 धिपत्यागि योजयेनु ॥ ॥ राजाको कुमंत्रिप्रोको हो भया को धिकासितो भिअजानिआमदासि

राहेरिषवेगर्भो राजाले येस्तामंत्रिननुत्या उनु ॥ ५५ ॥ मुलवृत्तिहिनो धिरसर्वत्रपरिष्पक ॥ सुविप्र
 व्यावसायि यधमीधसोविधियते ॥ ॥ राजाको विचारिको भर्त्ता सर्वकार्यजो न्या धिर्यवंत वेसरत्न
 को परिष्पाजों न्या सुविप्रविचारिनु ॥ ५६ ॥ आयुर्वेदकृताभ्याससर्वग्याखंप्रियदर्शन ॥ आर्यसि
 लगुरोपेत यधवेद्योविधियते ॥ ॥ वैश्वेसत्रअभ्यासजों न्या नारिभेदजों न्या रोगहेरिकन औष
 धिदिन्यासिलवंत गुरावंत रोस्ताला ईवैद्येनुत्या उनु ॥ ५७ ॥ पितृपितामहोदयो सासुग्यामिष्ठ
 पायक ॥ सुविप्र कथिनप्रै सुप्रकाले प्रस्यसेते ॥ ॥ वराज्यूवावुदेविशस्यनसाखवंतमिहोपाक
 जों न्या कपरितभया को सुविगर्भो रोस्ताकनभास्यानुत्या उनु ॥ ५८ ॥ सकृदुक्तगृहितार्थो लघुह
 स्तो जिताकर ॥ सर्वसाखसमारोकि यधलेषक उयते ॥ ॥ पुस्तकमों हों को विंशो वेदसुप्ताको अ
 र्थसमुपनीवाडो लेषन्या सुद्धलेषन्या रोस्ताला ईलेषकनुत्या उनु ॥ ५९ ॥ ईगिताकालतत्त्वगो

वषांनपियेदसंन॥अपुदिमासदादसपुतिहारसुव्यते॥॥कामकोभंसारजात्यावलिषोसवे
 सितपुतिगधत्याअहंकारनभयाकोदयावंतयस्तानेमानिसलार्द्रराजाकोभंसारितुल्याउनुजे
 गच्छ॥६०॥समस्तकृतसाखगपंडितस्यजिष्यत॥धैर्यसौरीगुरावेतसेनाधेसेविधियते॥॥हर्ता
 कर्तासमस्तविश्वसरापयईडियजितनसकन्याधिर्यवंतअवगुरावंतसेसापुरुषलार्द्रसदीरगर्नु राम
 ॥६१॥समस्तहयसाखगोवाहनेषुपरजित॥सौर्यविष्यगुरावेतअस्याधेसविधियते॥॥धोरा ॥८॥
 कोकार्यसाखजात्याआपुख्यावहारजात्यासौरीवंतगुरावंतसेसाकनराजातेअपुवारितुल्या
 उनु॥६२॥मेधाविवाकनुपपाग्योपरवितोपरश्चक॥धिरयथोक्तवादिशयघदुनोविधियते॥॥वु
 छिवंतकोमरावचनभयाकोअर्कीकोपितसेसेछभरिजात्याधिरवंतवाजिजमात्रेवोलन्यासेसा
 लार्द्रराजातेउकिलतुल्याउनु॥६३॥पाथिवस्यायभृत्यस्यवदाभिगुणात्तसरा॥येरासबुधते

राजाभंदागारितथैवव॥॥राजाकोपनियाकरवाकरकोपनिगुरावरीनामैलेगयाजस्तोमानिस
 हातिराजाकोभंसारभरिछभंसारिहुनु॥६४॥अतएवकुलिनानांदयाकुर्वेतिसंग्रह॥अदिमध्यव
 सानेषुनितेयास्यंतिविक्रिया॥॥एसमाहाकुवंतभंसारितुल्याईकृतअदिमध्यअवसावषर्यत
 वितोपछैनतस्कारराजातेकार्यकालमामानिसविशारगरिराषनु॥६५॥पंडितेषुगुरा
 सर्वेमुषदोषानुकेवला॥तस्मात्मुषसहशेरापुजयकपुसस्मते॥॥पंडितछेउसवैगुराहुं
 छसवैदोषमुषसितहुंछतसअर्थहजारमुछादिपंडितकोसंग्रहगर्नु॥६६॥पुग्गराद्योय
 मानेनुसंतिराग्योपुयोगुरा॥यस्यस्वर्गनिवासप्रपुत्करूपधरागम॥॥एस्ताएस्ताकुछि
 धातिकाव्यमाताईकनराजाताईतिनगुरामिलहुंकुनकनभयायसलोकमाहाधनपुषू
 रवापिहुंछेछत्योमोर्गवापिहुंछे॥६७॥मुषनिजोयमानेनुत्रियोदोषामहिपते॥अयेसप्या

यथासदनरकेयतनाधुवं ॥ ११ ॥ सुर्वलाईकार्यमात्ताईतिनदोषहं अवसेसधानराससलोक
 माघाप्रभयंतरारकमाजोह ॥ १२ ॥ तस्मात्तभुषरोनिसंधमीकामार्थवृद्धयेतु ॥ गुरावत
 निजोयतेगुराहिनंविबर्जयत ॥ १३ ॥ तस्कारनराजातेधर्मअर्थकामवहाउत्पागुनिकनमनु
 छाताईकार्यमात्ताउनुगुरानभयाकामानिसताईजीतगर्गा ॥ १४ ॥ यत्किविकृततेभतेभ राम
 भंवादिजवासुभं ॥ तेनसंवृधतेराजासुकृतेरपि ॥ १५ ॥ योकोहिवानकहहलेसुभकार्यगरनुतैय ॥ १६ ॥
 नियोधर्मरपायसवैराजाकनलाह ॥ १७ ॥ यथाहंसंपनिषेतनापहादुनसेदुनै ॥ तथापु
 रुषमप्यावंकुलसितेनकर्मरां ॥ १८ ॥ यस्तैगरिसुनकोपरिस्मागर्नुतताईकनधललेधुलिका
 रिभलोमंदोयाहाहं ॥ १९ ॥ ग्यातव्यपेधरोभुत्यावाधवाव्यासनागमे ॥ अपकारेनया
 मिबंभायीयविभवंस्पयेतु ॥ २० ॥ कामअहाईकनवाकरकोयाहाहंछसंपतिसक्यापीछुत्या

दिनकोयाहाहं ॥ २१ ॥ भुत्यावहुविधारजानुउतमाधवमध्यमा ॥ तेनियोयायथाजोग्रवि
 विधेध्वैवकर्मस ॥ २२ ॥ वाकरभन्याकोधेरैपुकारकोहंछउतमाकाधटियासोविवाताईजोतजंजो
 ग्यकार्यमात्ताउनु ॥ २३ ॥ आतस्यंतपरकुरंतवद्वयसनिनसष्ट ॥ असंतुष्टमभक्रुष्याय
 पुनराधिप ॥ २४ ॥ राजातेकस्तोवाकरराधनुभन्याअलमिसुर्वकोधिलोभिवामनिधुर्तअसंतो
 किवानिगर्ग्यैस्तावाकरनराधनु ॥ २५ ॥ तेजेस्यातमिनमत्युग्रमत्युगकृपनंत्यजेत ॥ कृपनाद
 विस्यषगपतस्मायकृतनासतं ॥ २६ ॥ अतिउगुकपरिस्वामिकनछाडन्याउगुपनिकपरिपनिभ
 माकाराजाकनछाडनुसेस्ताराजाकोकार्यनासहं ॥ २७ ॥ वामभायीसुतोमुर्वपुषकोवाग्विवा
 रक ॥ निदनेहोवधुवर्गप्रत्येदस्यामाहात्सुधं ॥ २८ ॥ आफुलेअहायाकोकामछाडिअकीको
 कामगर्ग्यैस्याहिसुर्वछोराअहायाकोकामनगर्ग्यैवाकरहनेहनभायाकाईनईलाछाउनु ॥ २९ ॥

ताकश्चित्तकस्यचित्तमात्रं न कश्चित्तकस्यचित्तं ॥ कारनादेवजायतेमित्रानित्तिपुवस्तथा ॥ ॥ क
 सेकोकोहिमित्रपनिहैनं कसेकोकोहिपियारोपनिहैनं कार्यकारनलेमित्रपनिहैनं पियारोपनि
 हैनं ॥ ७७ ॥ कार्यार्थालभतेकालेनलोकापरमार्थतः ॥ वस्तास्मिरस्ययंदुष्टपरित्यज्येनिमातरं
 ॥ ॥ आप्राकार्यकानिमित्तलोकहृत्पुतिगर्हन्धर्मकानिमित्तकोहिगर्हन्धर्मकोदुदसक्या राम
 पछिवाछालेआमाताईछायाहै ॥ ७८ ॥ कुतोव्यसनिनोनिद्राअवृत्तस्यकुतो रति ॥ कुतसोषिद ॥ ७९ ॥
 रिदस्यदुर्जनस्यकुतसमा ॥ ॥ जुवायाव्यासनिहृत्कननिद्राहृदेनअसंतोहितारतिहृदेनदरि
 द्रताईसुषहैनदुर्जनताईसमाहृदेन ॥ ८० ॥ तसकलस्यकुतोमांन्यदुर्जनकुतोसमा ॥ वैस्यासि
 र्णाकुतहैनंकुतसस्ययकाभिरां ॥ ॥ वैस्यासिहैनं वोरताईमान्याहृदेनदुर्जनताईसमाहृदे
 रावैस्यासिहैनं उउलेहैनं छिनायां हैनं सस्यहृदेन ॥ ८१ ॥ दुर्वरस्यावलोराजावालाणां कु

दितंवले ॥ वरंमुर्धस्यमोनिस्वयोरानामनृतंवले ॥ ॥ दुर्जनकोवल्तराजावालष्यकोवल्तरनुमुर्धको
 वलभंसंसेमोनभैरहनुयोरकोवल्तरअसत्यश्रुतेवोलेन ॥ ८२ ॥ अनाथानांदरिद्राणांवालवृद्धतप
 स्विनां ॥ अन्यायपरिभुतानासर्वधापाथिवोगति ॥ ॥ अनाथकोदरिद्रकोवालष्यकोहुद्राकोअं
 न्यायमिषिमां हकोवल्तरभयाराजाहो ॥ ८३ ॥ व्याधितस्मार्थहिमस्यसत्रुमित्राससितस्यय ॥
 हृदयस्यकदगधस्यसुहृदसंतमौषध ॥ ॥ रोगलेगदधभयाकोमनुष्यकनधननभयाको
 सत्रुकादललेकपटभयाकाहृत्कनदुष्टमित्रदेष्टदायात्रैओषधिपित्याहैमांन्याहैनं ॥ ८४ ॥
 आनुलेव्यसनेपाप्रेदुर्भिस्येसत्रुविग्रह ॥ राजद्रालेस्मसानेवाजतिष्ठंतिसवाधवा ॥ ॥ भाईभ
 न्याकाकस्ताहंभयारोगमनुष्यपदीमासत्रुलेपिद्रादिदामाराजाकोधनभयामास्यसानमास
 गरहभ्याभाईहैनं ॥ ८५ ॥ भावसुदिमनुष्यानां ग्यातव्यसवदौकर्मसु ॥ भावेनयुविताकोताभा

वेरादुहितानंरा ॥ मानिसकनकेहिकाममापनिभावाणावुञ्जनुपद्धपापरधर्मभावनाभिनेछछोरि
 तार्इयुवनागयाभावनाभिनेतसकारनभावनाहुलोछ ॥ ८५ ॥ नदेवोविधनेकाष्टपासागेनवमृन्म
 ये ॥ भावेरीषुविधनेदेवनस्मातभावोमहत्तरं ॥ काठमापनिदेवताछैनंङुगामापनिदेवताछैनंमादामा गम
 पतिदेवताछैनंभावनामादेवताहुंछंनस्काररामाभावहुलोछ ॥ ८६ ॥ सिध्यानादेवताचार्यग्यारामा ॥ ११ ॥
 वार्यदेवता ॥ देवतायोषिताभक्तावात्सराजनदेवता ॥ सिध्याकोदेवतागुरुहोगुरुकोदेवताग्यारा
 होत्यादिनकोदेवतापुरुषहोसवैमनुष्यकोदेवतावात्सराहोहुतो ॥ ८७ ॥ विपुपस्यजथावंधिआवा
 र्योपस्यदेवता ॥ पुथुपस्यजथामातामित्रपस्यजथासुतं ॥ वात्सरात्ताईअग्निऊँमानुगुरुदेव
 ताऊँमानुपुथुआमाऊँमानुमित्रहोराऊँमानु ॥ ८८ ॥ गुरुरग्निधिजातिनावनीरावात्सराकोदेवता
 अग्निहोईत्यादिगरेवर्नकोगुरुवात्सराहोत्यादिनीकोगुरुपुरुषहोसवैजातकोगुरुअभ्यागतहो ॥

॥ ८९ ॥ उलमस्यपिवरीस्यनिबोपिगुरुमागतं ॥ पुजनियोजथायापंसर्वस्याअगतोगह ॥ अपूर्विज्जु
 भ्यागतधरमाश्रायापद्धिअष्टकुलमाभयापनिनिबकुलमाभयापनिपुजागर्नअभ्यागतभन्याका
 सवैकोगराहो ॥ ९० ॥ देवतापुजयेभत्याभत्यादानेनपुजयतु ॥ सद्रुजोषकारेनविवाणामभि
 वंदनं ॥ भक्तिभावलेदेवताकोपुजागर्नवात्सरात्ताईजोहोलाहातगरिसमोषगराउनु ॥ ९१ ॥ धर्म
 स्यमुलडाजानांतपमुलंयवात्सरा ॥ वात्सराजवपुयतेतत्रधर्मसनातनं ॥ राजाकोमुलधर्महोवानं
 त्तिराकोमुलधंतपहोतस्कारनवात्सरापुजागर्नतस्माउधर्मकोवासहुंछ ॥ ९२ ॥ आचार्यफलतेधर्म
 आचारोफलतेधनं ॥ आर्यफलतैमाप्रेतिआचारोहंतिलक्षणां ॥ धर्मभन्याकोआधारनलेछधनप
 निआचार्यछेउहुंछआधारतेसवैथोकहुंछआधारतेईषपनिहुंछ ॥ ९३ ॥ भोजेभोजनसक्तिप्ररति
 सक्तिवरिवियो ॥ विभवोदानसक्तिप्रयनालस्यतपसंपलं ॥ भासाभन्याकोभयादानगयाकासक्ति

हुंछ योतिन थोक थोरै न पस्या लेमि दैन ॥ १४ ॥ वा ले ये व य ले धर्म मनि संपत्त पुजिता ॥ फलानां मधि
 पकाना सा स्य तपत न भवेनु ॥ हे मनुष्य कं हो वा तष देधि धर्म गदै रहनु स्यात्त भया को अनित्य छ
 पाक्या को फल जो छ त्यो धाम धाले ता भनि जानु ॥ १५ ॥ संदंभ वह तो धर्म को धे नै कं वह न पत ॥ अधु धं राम
 यह तं ग्यानं पुमा दे नै वह तं सुते ॥ अहंकार ग पाप छि धर्म को ना सहं छ को धि भया त प को ना सहं छ ॥ १६ ॥
 अहं भया ध्यान को ना सहं छ ति दाले सा सवना सहं छ ॥ १७ ॥ अदि पा गौ ह तो हा मं ह ता भक्ति र सा छि
 का ॥ उपजि व्या ह तो कं न्या सार्थ पा क क्रिया ह ता ॥ अग्नि पुज्या ले न भया मा हो म ग मा को वे र्य छ सा
 छि न भै धा मा को अं न वे र्य छ आ फु का नि निर्मा ष पा क्या को कर्म ग मा को वे र्य छ ॥ १८ ॥ दरिद्र व्या धि दुषी
 शिव ध रं व्या स ना ग मा ॥ वेदानु फल मे ना नित स्या दा नं वि सि ष्य ते ॥ पूर्व जं म मा दा न न ग मा को पा प ले
 प स जं म मा व्या धि हुं छ कं गाल दु मि हुं छ त स्कार न गर्त प छ ॥ १९ ॥ पुल का र्द व धा ने षु पु न्य का र्द व जं त

पु ॥ ताड स स्य मनुष्य सु ये व धर्म वहि सकृ ता ॥ अधु मि पा पि नि मु क स्तो हो भ र्म्या धान को व धा ज स्तो
 हो प सु जा त सा पु वि ज स्तो जो धर्म मा वि मु ष छ त स्का ता द सि ये हि हो ॥ २० ॥ त्यो दु र्जन सं सर्ग भ ज सा धु
 स मा ग मं ॥ कुरु पु न्य म हो रा त्रं पा र्थि त्प म नि त्प ता ॥ त स अ र्थ म नु ष्य हो दु र्जन को सं सर्ग छा ड नु स्या धु
 संग गर नि त्पं भं गं वा नं को सं सं रं गं गं रं सं सं रं छि न रा त्र पु न्य गर नि त्प भ ग वा न को स्म र रा ग र सं सार ये हि
 हो बु रु ॥ २० ॥ इति श्री वा त के सार संग हे पु थ म स त्त क स मा पुं ॥ १ ॥ सार्वा र्थ व द्पु षा वि द्वा नु ते रें दानि ति व
 द्पु षा ॥ वे दार्थ व द्पु षा वि द्वा र्थ व द्पु षा ॥ पंडित को आ षा सा स हो रा जा का आ षा नि ति हो वा ह
 रा का आ षा वे द हो दु त र ज न का आ षा ध न हो ॥ २ ॥ रा जा ध र्म नि ध र्म ज पा पे पा प स मा ग मं ॥ रा जा नं दु नि
 वृ ति स्य ज या रा जा त था पु जा ॥ रा जा ध र्म ष भ या पु जा प नि ध र्म ष हुं छ रा जा पा पि ष भ या पु जा प
 नि पा पि ष हुं छ रा जा ले दु र्थो क ग मा पु जा प नि दु र्थो क गं छ ज स्तो रा जा त स्तो पु जा ॥ ३ ॥ उ दाम सा

हसंधैर्येवतवुद्धिपराक्रम॥**३॥**समेदानेनभेदेनकर्मनयवलेनय॥सर्वस्तुसदासनुधातनि
 योनराधिया॥सस्यदानभेदेक्रमवत्तगरिवस्तुलायापनिराजालेवधाउनुकरावाहिच्छ॥४॥पात्रेया
 गिगुणोरागिभोग्यपजनेसहा॥साखेवोदरनेयोधानुपतेपंवरस्परां॥पात्रोहेरिकनत्यागगया राय
 गुसादेधिषुसिह्याआफुपरिवारवादुलागरिराघयासाखवंतसंगममासुराह्याएतिपायथोक॥१३॥
 राजाकोपावत्तसराहंछ॥५॥उतमंपुरिषापातेनसुरोभेदेनजोजयतु॥तुर्द्धमर्थपुदानेनसमनुत्य
 पराक्रमे॥आफुभंदावडाताईमांयागरिवुआउनुवारिवालाईयत्तलेवुआउनुतोभित्ताईधन
 दिप्रारवुआउनुआफुसमानकाताईजसोगरिहंछतसोगरिवुआउनु॥६॥अनमहिउपलेनेकवि
 झाहिंद्रपरस्यय॥गृहेकुर्मईवांनिपभावप्रलस्ययतु॥आफुनुदोषपराईलाईदेवाउनुहेरा

पराईकोदोषजायाकोगुपुगरिराघनुकोनैसपयमाहापुकासगरिसिसिरिनुमाहाकहुवालेगुंग
 सुकाईरगमिसमयमाहापुकासगछकसोगरिपुकासगर्नु॥७॥मनसायितयेतकार्यवयसानपुका
 सयेतु॥मंत्रलदनगुहान्माकार्यसिधियजातये॥मनलेयितायाकोकेहिकामभयापमंनिमुषले
 पुकासगर्नुहैनमंत्रजस्तोगुपुगरिगयाकोकार्यसिद्धहंछ॥८॥उपकारगहितेनसत्रुगांसत्रुमुधरे
 तु॥पादपांरांलगेकरह्येनकंतकेनैवकंठकं॥सत्रुकाहातवाटआफुनुकामसिद्धह्याभयासत्रुह
 तपनिकामताईरआफुनुकार्यसाधनुजसेयाविकोकाढोकाहालेरिंकनुसतसेहो॥९॥वहेधि
 वसुकंधेनयावत्योंतकालेविपर्जयतु॥तथेवमागतेकालेभिंझातुझतमिवास्परा॥आफुनुदाउ
 षस्यामाहासत्रुहंतैलाईकाधयहाउनुजसेआफुनुदारसफलहंछतसेभरिपानिकोगागो
 ङ्गामापछादीहेकाधयहायाकासत्रुलाईगपानिजनतेपछीनु॥१०॥हेजिहेंकनुकलेहमधु

रकिनभाषसे॥मधुरंवदकल्याणालोकोयंतिमुधुरंप्रिये॥हेजिह्वपियारोववनक्यानवोत्तुदोन
 मिहोववनक्यानवोत्तुदोनपियारोववननवोत्त्यालेकपिरिंहंकार्यनासहुंछमिहोववनवोत्त्यालो
 कषुसिंहंछंसवैकार्यसिद्धहुंछ॥११॥जिहागेवसनेगपिजिह्वामित्रवाधवा॥जिह्वामित्रवाध
 नस्यापिजिह्वामित्रवाधधुवं॥॥जिभैकादुपामाहालक्ष्मिकोवासहुंछजिभैकादुपामाहाईष्टमिसम
 नहुंछजिभैकादुपामाहावधपछजिभैकादुपामाहाजिवजाछतसअर्थलेसंसारैवोत्तनु॥१२॥॥१४॥
 प्रियवायपुनानेनसर्वेनुष्यतिजंतव॥तसमातदेवगपातयंकिकाक्यनीपदरिदुता॥॥पियारोव
 यनवोत्त्यादेधिसवैजातिषुसिंहंछंतसअर्थलेवनकादरिदुनहुनु॥१३॥अग्निदोगरदध्वेवस
 नुमिंपारिधनापहा॥सबदारपहारियषदेतेआनताईन॥॥परईकाधरमाआगोलाकुन्याहति
 पारकाठिआईपर्याधनहरितिन्यावृताहरनआकुन्याजोईहरन्याऐतिछजनानाताईआतता

नमंनु॥१४॥अनताईनमायांतेमपिवेदानक्षुपारगं॥जिध्यानसतंजिध्यानेनतेनबुलहाभवेत्॥॥
 वेदसाखशिपुर्नीहुंन्यावाहिराछतपनिआनताईनभयापछिमायातपनिबुलहत्यपापलागै
 न॥१५॥राष्ट्रपालयतेनित्यसत्यधर्मपरायन॥निजितपरसेमानिपतिधर्मनपालयत॥॥ला
 जालेजाविगर्नुधर्मसत्यलेपुजापालनपरसेनाजिचुतवराय्यवृद्धि॥१६॥पुष्टपुष्टविधिनिपा
 मुलहिंदोनकारयत॥मालाकालाईवांगारिमथाराजातिसारतां॥॥राजाकोरमातिनिकोरे
 केवाटोगर्नुकुल्याकोकुलटिपनुरुषकाटनुलेसेराजालेडंडगर्नु॥१७॥अहिरंन्यमुदासिनंमरांध्य
 स्थंयेधिरोगुरु॥योतबुधपतिमंदातमासयववनस्यति॥॥योसनुयोमिनुयोमध्यमभनिनजा
 यामनुयकोसवैकार्यनासिंह॥१८॥अनायकयकतारंअनाथकलहप्रिये॥आनुलेसर्वभ
 छियनरसिधुंविनस्यति॥॥उत्पतिनहेरिवहुतषर्बगर्नीराजानभयाकादेसमाङ्गरागर्नीरो

गिहदासासवैथोकषायाएतिमनुष्यवाडैनासहं॥१२॥ ककालकानिधित्रानिकोदेसकोव्यायग
 मं॥ कोस्याहंकायमेसकिरिति वितामुहुमुहु॥॥ आफुरसुदिनकुदिनविचारगर्नुसनुकोराय्यमित्र
 कोराय्यकस्तोछकतिउपताहंछकतिषयहंछदरवारकोक्चारकमछवडोकठिनछराजातेएतिस
 येविचारगर्नु॥२०॥ सिहाय्यकंवकायकंसिष्ययत्वातिकुर्कृतानु॥ वायसात्यायसिष्ययषतस्वाराखि राम
 शिगईभानु॥॥ सिधछेउएक१गुरावकुंताछेउएक१गुराकुषराछेउवार४गुराकागछेउपाय५॥१५॥
 गुराकुकरछेउछदगुरागदाहाछेउतिन३गुरायोगुराग्यानिजनतेसिकनु॥२१॥ प्रभुतकार्यम
 त्यापवापोनरकर्तुमिछति॥ सर्वाभ्येषुतस्कार्यसिहादेकविधियते॥॥ केहिकार्यगमापनिसि
 धिनगरिनछाडनुयोगुरासिंधकोलिनु॥२२॥ ईदियातिनुसयस्यवाकवात्पारिडतोनरा॥ का
 र्यकालेप्रपंतालिसर्वकार्यनिसाधयतु॥॥ ग्यानिमनुष्यलेवकुलाऊंआफुरकार्यसि

दिनहुयासंमसांतभैरहनुकार्यकोओसरपयापछिसर्वकार्यसाधनगर्नुयोगुरावकुंता
 छेउकोलिनु॥२३॥ पायुतथानंययुधंयसविभागंयवंधुषु॥ खियमाकंस्यभुजित्वांसिष्ययत्वारि
 कुर्कृतानु॥॥ घातकालउठनुसबुसिततडनुग्यानिगोत्रसितवरोवरमितनुअखिछोरछोरि
 संगवसिष्यानंयोगारगुराकुषराछेउकोलिनु॥२४॥ गृहमेथुनदष्टत्वेकालेयालयसंगहे॥
 अपुमादिसुधुर्तेष्वपंयसिष्ययवायसात॥॥ गुप्सितअखिसंभोगगर्नुधुर्तहुनसहायमा
 थिवाहिंदावस्तुसंगहगर्नुअहंकारिनहुनबंधहुनएतिपायगुराकागछेउकोलिनु॥२५॥ व
 द्वासिवात्पासंनुष्टसुनिंदसिधुवेतन॥ स्वाभिभक्तप्रसुतप्रषदेतेस्वानतोगुरा॥॥ पाया
 छेरैखानुनपायायोरेतेसंतोषमांयाअल्पनिंदावाडैजागन्यास्यामिकोसेवागर्नीसुरेहुन्या
 ऐतिछथोकगुराकुकरछेउकोलिनु॥२६॥ अविज्ञातहेद्वारंसितोहनंयदविंदति॥ सुसंतु

हो भवेत्तु नित्यं निमित्तं यद्गर्दभातु ॥ न विस्वा ई भारिलोक ज्ञाता तो सिंघिसो न मां न्याथो रे भया
 परि संतोष भां न्या योतिन गरागदा हा हे व कोतिनु ॥ २० ॥ विसनेता गुणा पु क्राय सु कुर्यादि
 वस्यता ॥ भजिष्याति रिपुं सर्वनु न ज म प्रभा वि स्यति ॥ २१ ॥ यो विस गरा जो मानि सका ह्यो मा
 निस वि य स रा हो ता स वै स नु ता ई छे द न ग ली आ फु जित ता ॥ २२ ॥ अ मुखौ जो य नु ध्या तां रा म
 म नु सं त प्र वे त सा ॥ पर रां कं म्यं मां ने स्य रो प का रे रा पुं सा भ व ति वि ग्र हं ॥ २३ ॥ ग्या नि ज न ते रि स रा ग न ॥ २४ ॥
 गर्नु र पर नु प का र गर्नु र कै रू ग रा हुं दै न रि स रा ग सि त नु प का र ग या कै रू ग रा हुं छ ॥ २५ ॥ ए का द र पृ
 थि गि वा ऐ व रं ति मा हा र्ज वे ॥ रं आ सा हि ता वि न स्यं ति भै रं द ई व प छि ने ॥ २६ ॥ ऐ क पे र दु र्क पा ल भ या
 को भै रं द ना म व रो स मु द का ति र व स्त थो दु र्क पा ल ते आ फु सं म मा हा रू ग या र दु र्क को ना स भ यो
 न स का र न आ फु सं म मा हा रू ग रा न गर्नु ॥ २७ ॥ व्या स ने सं ति कु र्वा ति ए न के रा पि स ग त ॥ अ स वा न

रज्ये पु छे पु रा दा स रा या य था ॥ आ प दा प र्दा मा सा नु हुं तो न भं नु क सै का स ग त ग रि आ प दा र्नु क
 सो भ या आ प दा मा हा की रा म वं द ले वा न र सि त पि त्वा रि ला ई क न ग र्नु को पु छ र स मा ई भा लु सं ग
 ग रि आ प दा का र्जा था ॥ २८ ॥ दु र्द रं सा ग रं ति रां स म ग वा न न र व ले ॥ अ न मु न पु र्व रा मे न स नु वं
 ध रू सा ग रे ॥ २९ ॥ हे रै भ या प छि सा ना ले प नि हुं तो का र्थ्य गर्नु स किं छ क स भ या की रा म वं द ले
 वा न र स वै पि ति क हि ले न भ या को स मु द मा सो धु ला या था ॥ ३० ॥ यु यं स न व यं पं थ वि रो धं व थ
 र स्य रं ॥ पर रा क म्य मां यो पि व यं पं थो त रं स ले ॥ ३१ ॥ यु धि धि र रा ना ले दु र्जो ध न छे उ भ या हे दु यो
 ध न ति पि ह रु स य भा ई हा पि ह रु पा य भा ई पर स्य रं वि ध ग रि र हा छु ते प रि अ क र्म सि त व ध
 प या प छि हा पि पा य भा ई र ति पि स य भा ई र के ह नु प छि ॥ ३२ ॥ हि त्वा धि त्वा य क र्मा रि कृ त्वा
 वे स म सा त कं ॥ ग्या त य स म ता यां ति य पर ये र ये व थ ॥ ३३ ॥ आ पू रा कु ल कु दं म व स गं स नु नो गं नु

दाजु भाई संग सवुता गर्नु है न आ फुधर्म अधर्म सुकर्म कुकर्म जाया को हु छ मर्म पाया पाया को
 हु छ तव मर्म भेद गरि आ फु नास गर्हु ॥ ३४ ॥ विना जु तो मनुष्या नाम नंदा वाजि ना जु तं ॥ आ सो
 भाजु गुर विरा वरना मात पो जु तं ॥ ॥ मनुष्य को गुर धंदा घोरा को गुर मैथुन अरि को गुर वि
 धवा हु नु क क पला को गुर दाम ॥ ३५ ॥ अधा जु त मनुष्या नाम नंदा वाजि ना जु रां ॥ अ मैथु राम
 राज तारि रांग मत्या नामैथु नं जता ॥ ॥ मनुष्य लाई ज रा पंढ व ठ नु घोरा ताई न व त्या ज ता स ॥ ३६ ॥
 भोग नु पाया अरि लाई ज रा पुन घोरा लाई मैथुन जा ॥ ३६ ॥ कष्टा वृत्ति परा धिनं कष्टा वा सा नि
 रा प्रया ॥ भुत पुर्वी र्य स जु क सर्व काष्टा दरिद्रता ॥ ॥ पराई को अधिनं हु नु कष्ट आसा को निरा
 सा भया कष्ट पहिले धारा पछि दरिद्र भया पछि तो ज सो हु लो कष्ट काहि छै रा ॥ ३७ ॥ अणि
 त्या धा धि त्व मुर्ष पु वा सि पर से व क ॥ जिवितो पि मृतं पं थं पं थै ते दु ख भा गिरा ॥ ॥ धि स्म करो गि

पु वा सि मुर्ष का करि ई पा व ज ना जि उ दा छ त प नि मृत क व रो व र मा हा दु षि भं नु ॥ ३८ ॥ यो य न नि
 त्प मा यां ते भु क्ते वा पि दि ने दि ने ॥ स त व त धु ता यां ति य दि स क्क स मो न र ॥ ॥ अ की का ध र मा वें
 हें यों स दा जा नु स दा षा नु ग म्या प छि ई द्र ज सो हु लो आ द धि भ या त्यो प नि ह तु को हुं छ ॥ ३९ ॥
 अ हि रं य मु दा सि नं गृ हं गोर स वं जि तं ॥ प ति कुर क ल व व त र क स्या प यो धि ॥ ॥ सु व र्ण आ
 दि द्र व्य न भ या गृ ह कृ गा ई न भ या का ध र पि ति न भ या कि अ रि ए ति न र क नु त्प ह न् ॥ ४० ॥ स्थ
 त ज घोरा दारा मोल दमरां स धृ गा पि नि ॥ ध ना के सा य दा सि ता त दा ते दु ख भा गि नि ॥ ॥ भी रा
 म का जो ध हु ला थि या त्त स्म रा का हि उ दा स धृ हं थ्या सि ता का के स ध ना थि या त्त स भ र्थ ले दु
 ख प या थ्या ॥ ४१ ॥ प रं नं प र व रं व प र पा रां प र रि व ॥ प र स्य क गृ हे वा से स क्क स्या पि रि वं ह
 रे नु ॥ ॥ अ की को अं न षा त्या अ की को व र ता नु न्या प र रि व ग म न ग र्या अ की को ध र मा व द्या ई

पुनस्तोदुलोभादधिभयापनिभयानहं॥४२॥असौध्यानिधनोविद्वानुनसोध्यापुत्रवांनर॥असौ
 ध्याविधवाभारिपुत्रपौत्रपुतिष्ठित॥॥ग्यानिभयापनिकंगालभसुविहोराजातिनहुन्यामनुष्यापनि
 असुविहोराजातिभयापनिषस्यभयाभारिअसुवि॥४३॥विभवासर्वपुण्यानेनसरिरानंदेनिहि
 रा॥वाराडालेपिनरमेष्टेयस्मास्तिविपुधनं॥॥सवैलेधनकोपुजागर्हनिर्धनिजर्जितुदोहृत
 यमाजतिकोहधनहेरभयावांतालहोतपनिसवैकाप्रेष्टुहं॥४४॥धनमाहुपरंधयधनेसर्वपु राम
 तिष्ठितं॥जिवतिधनिनोतोकेमृतायेतोधाननरा॥॥दुलोधनभयाकोधर्महोनाहाधनहृताहासवे॥४५॥
 थोकहधनिहभुशिराअहंकारगमाधनकोनासहं॥४५॥अनिसंपदमापनंभेतवंपतनाद्वयं॥अ
 न्यसिषाहं सत्यं पुजेरापातितं॥॥वहुतैसपत्निभयापहिषज्ञाभंनकोडरहं कस्यभया
 आस्तापर्वतकनवजलेषह॥४६॥कोभसोभसकोनित्यंकोसुषानिधरोगानां॥यस्यभार्यावस

नृणां कृतस्योत्तमसंवंगहे॥॥सर्वभयाकराभमयकाहाहसहारोगिकनसुषकाहाहजस्कास्वादिन
 असंतोकिहोउस्काधरमाहाकाहाआनंदह॥४७॥सोभित्यकर्षकानित्यं सुषनित्यंमरोगिना॥भा
 र्याभनृवसायस्यारित्येतसंवंगहे॥॥सवयगर्भजनकोदुर्धस्यहुदैनसुषवाभ्यारोगिताईदुष
 हुदैनजस्कास्वादिनआफ्रावस्यहउस्काधरमाहासदाआनंदह॥४८॥सर्वपरंवसंदुषंसर्वमातृमा
 वसंसुषं॥येनहिधासमासेतसरांदंसुषदुषये॥॥सवभंदावडोदुषयमावावस्यभैरहनुदाज्यभा
 ईईष्टमित्रआफ्रावस्यभयावडोसुषयोदुईसुषदुषकालस्यनहं॥४९॥सुषस्यानंततंदुषंदुषस्यानंत
 रंसुषं॥सुषदुषयनुष्यानांयक्रवत्पारिवर्तते॥॥सुषकार्कहदुषआउहदुषकापहिषुषमाउह
 यनुष्यताईसुषदुषयक्रहैफिहं॥५०॥वहुभिमुर्षसंघातेरंयोनेयसुवृतिभि॥छादितियतिगरा
 सर्वानुमेष्टेरिवदिवाकर॥॥मुर्षसवैवाहुताभयाकाहाउमागुराजाराजनकोसोभाहुदैराकसो

भ-याभीसुर्यलाईवादललेछोपनाईछोपछं॥५१॥असतासहसंहराकोनयातिधमागति॥
 पयोपिसौदिनिहस्तेमद्यात्पविद्यते॥॥कुजातिसितसंगभयापछिकुजातैकोताउछकस्य
 भ-यासुदिनिकाहातवाउदपियापणिमदपियोभंछं॥५२॥अस्तत्सपकंदोषेनअध्यानि
 सधवा॥सार्जेबुतिमिस्यकंसमोपिविसमायते॥॥असर्जनसितसंगयापछिसर्जनपनिअराम
 र्जनहंछकसोभ-याअध्यारामाहासोभोवांलोपनिटेहोलागछ॥५३॥उत्तमंसुनेराकोराया॥५४॥
 तिसमुनति॥मुर्धनरुगाभिधार्यतेगुथितैकुसुमेसहा॥॥भलाकोसंगर्जयापछिनिष्ठप
 निउत्तमहंछकसोभ-याफुलसितद्यासउत्तमिछउपनिकपालमारहंछ॥५५॥किकरिष्य
 ति॥वेंकोंवेंसपकंदस्यभावोदुरतिकुम॥पस्यपरफलमध्यस्थोकषायोनांततागति॥॥संग
 तभलोपायोरव्यागर्नुसोभावनछोडासोभावछोडनुगाहोदिष्टतहेरअपवित्रकाकोहितो

तरेहंछं॥५५॥सर्कईरावसुबंधनमध्यनिपोपुतिधितं॥मधुस्मिरसमावृष्टिगाम्बकिंमधुरायते॥
 ॥सवरमाशिंवरोपनुमित्यदुदमहत्तेसिधनुनैपनिनिबुतिताकोतितैगुलियोहुदैव॥स्थभावफेर्नु
 गाहोछ॥५६॥पुस्तकेषुव्याविद्यापरहस्तेषुयधनं॥कार्यकालेनसंप्राप्तनसाविद्यानतंधनं॥
 पुस्तमाहाकोविद्यापरईकाहातकोधनआफुगर्जमाहापात्रिदैनयोधनहोईनयोविद्याहोईन
 ॥५७॥दूरस्थानिधियानिनिदनेहानिबवांधवा॥किपुयोनजकर्तव्यामथितोनिस्फलानिवा॥
 ताहाकामिअमननमित्याकादासुभाईआफुकार्यमाहापात्रिदैनयोधयालेक्यापुयोजन
 छ॥५८॥सुतयादमपुष्पाणिदूरस्थापिहिवाधवा॥कांताकालेष्वरूपप्रयकालेनोपुतिधित
 ॥॥वनमाहाकोफुलताहाकाभाईकार्यमाहापात्रिदैनधिरामालेव्याकोविचकारजस्तो॥५९॥
 प्रग्यावदनहिस्यकर्महिनस्तुयोनर॥निरयावेतजातस्यभस्यांयादुयैर्नयोयथा॥॥मुर्धलेवो

त्याको वचन न जांयाले ग-याको काम छारे उडाको घरा निजस्तो ॥६०॥ छाग युधं रिषि प्राधं द-त्यो
 कलहस्तथा ॥ व-कारे निस्फुल्लायंति प्रभाते मेघदंशरा ॥ ॥ योकाको जुद्ध रिषिका प्राध जोई पोई
 कोरयाल व्याहान को मेघ एति निस्फुल्ल ॥६१॥ निस्फुल्ल ग्या कृपनि सेवानिस्फुल्लारति वा नुरे ॥
 दाष संयु-क सितस्य भ्रति विपुस्य निस्फुल्ल ॥ ॥ कृपनिको सेवारोग को रति संभो दोषि वाह्यरा तप
 को विद्या प्रति निस्फुल्ल ॥६२॥ वरयतु कुलया प्राग्यो विरुपा मपिकं न्यक ॥ रुप प्रिनि न नि ॥२०॥
 स्पवैवाला रांदरो कुले ॥ ॥ शानि जन ले कुरुपि मयापनि आफु समान कि छोरि विवाहाग
 नुरां सिद्ध तपनि निवकि छोरि विवाहा नगर्नु ॥६३॥ विषादं प्य मृतं गाल मम्य ध्यां मुदपि क
 को वरा ॥ निषादं पुन मा विधा खारत न दु फुल्ला दपि ॥ ॥ विष भयापनि सं अं मृत भि कति नु अप
 विन मा हा छतपनि सुन पायाति नु निव छतपनि ठ तम विजा पासि क नुरि वरत न पाया कुल

निवका छोरापनि निनु योग्य ॥६४॥ कस्या दोष कुले ना विद्या धिना को यदि दिता ॥ केने
 तनं पुप्रे विष कस्य निरंतरं ॥ ॥ कस्का कुल मा दोष छे त कस्का ई रोग ते पिडा भयन कस्का
 पदेन कस्का घर मा सदा लक्ष्मि वस्या का छे ॥६५॥ दापो पाति गुरो पाति निर्गुरो लपि
 ॥ सुकुमालस्य प्रपस्य ना लो भवति कर्कस ॥ ॥ दोषपनि हुं छ गुरापनि हुं छ एति संद
 मलका फुल्ल को डा कुलो घर वो छते ते अलिक गुरापनि दोषपनि सवै का हुं छ ॥६६॥
 सि-व-हि-न-म-व-ले-छि-र-भोजन ॥ अं मृतं गुरावति भार्या अं मृतं वात भाषिते ॥ ॥ सि-म-न-
 त मा भागो अं मृत दुदापि नु अं मृत गुरावति स्यादिन अं मृत वात वस्ते वो त्या को वचन ॥
 दुःप्रभा प्राकृति कारि दुःप्रभा सुख मि प्रभु ॥ दुःप्रभा सुख नारि दुःप्रभा वचन प्रीयो ॥ ॥ संकं सस्कृत वारि दुःप्रभा
 वंत स्यामि दुःप्रभा सुख रिचका स्यादिन दुःप्रभा सुख वचन दुःप्रभा सेति भागे ते मिल ॥६७॥ नदिना

॥ नारिनां वपनिवृत्ता ॥ मनुष्यानां नृपोपाहु देसनाय वपनिवृत्ति ॥ ॥ नदिमध्यगंगाश्रेष्ठ अस्त्रिमध्यपा
 वताश्रेष्ठ मनुष्यमध्यराजाश्रेष्ठ देसमध्य आकुरयस्या को देसश्रेष्ठ ॥ ६६ ॥ पुत्रपौत्रसमातोकिरीदासिदा
 ससमाकुले ॥ भार्यविरहितं पुंसां यथा रंयतथा गृहं ॥ ॥ छोरानातिभयापनिकमाराकमारिठेरैछतय
 धनधांयप्रसस्तछतपनिजोईनभयाको घरवनेजस्तोहंछ ॥ ७० ॥ सर्वेषामेवरत्नानां त्रिवयोरत्नम
 तमं ॥ तस्मात्तदर्थं निवेद्या ता प्रतेका धननकिं ॥ ॥ सवैरत्नभंडारिवरत्नहृत्तोतमअर्थस्यादिनभ
 धनको क्याप्रयोजनछ ॥ ७१ ॥ कुरिबहंतिकुटुंबानिकुपुत्रो कुलहंन्य सकुलं ॥ कुमंत्रोहंन्यते राजा पुंश्वोर
 हंन्यते ॥ ॥ कुत्सादिनलेकुटुंबको नासगछे कुपुत्रले कुलको ससगछे कुमंत्रिले राजाको नासगछे
 रामको नासगछे ॥ ७२ ॥ रिवगां दोष सह आरिगुणारिउनिमहिपति ॥ गहाशरमुतो त्यतिमरंन्यपा
 ह ॥ ॥ स्वादिनछे उयं हंतं हं हं हजारदोरवछ गुणानि नछ काभया घरको रक्षा रक्षार्तुं छोरोजन्मा

॥ ७३ ॥ कवये किं न वस्यति किं न भक्ष्यति कायसाधु ॥ पुमादा किं न कुर्वति किं न
 निमज्जया ॥ ॥ कपिहस्तलेन देष्याको क्याछ कहिले नखाया क्या छ स्वादिनले क्या योगदै नं मदधिनु
 ले क्या योगदै नं ॥ ७४ ॥ पुत्रपुत्रो जन भार्या पुत्रा पुस्तु पुत्रो जनं ॥ हितपुत्रो जनं मित्र सर्वमात्मा पुत्रो
 ॥ ॥ छोरानातिभयले अस्त्रिविवाहागर्नुपिं देलाभनिछोरोजंमा उनुहितकानिमित्तले चिबला रु
 वै कार्यकानिमित्तले आफुरस्यागर्नु ॥ ७५ ॥ समुद्रवरनाभुमिपुकारावरनागहा ॥ नरेद्रावरनासादे
 नावरणास्त्रिय ॥ ॥ समुद्रकाधेराले स्थितपृथिविभिन्नाकाधेराले स्थित घरराजाकाधेराले स्थि
 तराय्ये यस्त्रिकाधेराले स्थितस्त्रिय ॥ ७६ ॥ नगाहानिनवागानिनपाकारनरक्षेका ॥ नवंधो नैववंधो वा
 सितायकुलस्त्रिय ॥ ॥ घरको वासले पनिपुकारनले रस्याहुदेनयिनाकुलको बेलिनवाधिरस्याहुदे
 ॥ ७७ ॥ नदिपातयनेतिरं नारिपातयनेकुलं ॥ नारिनां वपनिनां यस्वच्छंदकागतिहंछ ॥ ॥ नदिलेनि

गार्ह अरिबलेकुलविगार्ह नदिले अरिबल्य छंद कागतिहं छ॥७८॥ जत्नपास्ये स्थितं वृक्षाभृत्य
स्त्रीस्थितं नृप॥ पार्थस्थ पुरुषयोषिद्वष्टयति न सयं॥ ॥ तहराले मुरव्यांजिको हृषवे द्रुहराजाले
रव्यांजिको सेवक पिरो गार्ह अरिबले मुरव्यांजिको पुरुषो ई गार्ह ससय यतिहं न॥७९॥ नैव पस्याति जा
नां धत्ता माधो नैव पस्या॥ न पस्याति मदो न्यतो अर्थितो नैव पस्याति॥ ॥ जन्मदा देषिका नुत्ते केहि देषदे
राकासा नुरत्ते भलो मंदो देषिदे न गृहं कारिले पति देषे न धनाध्यात्ते पति देषदे न॥८०॥ जिरी मंन
यस्यति भार्या यगत जो वनां॥ ररापुत्या गतं सुरं सस्या यगृह मागतं॥ ॥ पावा ईकन बायाको अंनति
को यो वनवित्या कि अरिब नराको जिनि कन आ गुन्या सिपाहिनि को वालि शरमा पस्या पाछिनि कं
॥८१॥ तस्मिन् तस्माहिने वकुलहिने सरस्यति॥ अपा नरमने नारि गिरो वर्धति वासव॥ ॥ अल
निका धरमावस्या कित्ति क्षिनि वका धरमावस्या कित्ति सरस्यति कुपा वसंग गन्या अरिब पर्वत माधि

वकीलेनिसर्वेवैर्यं ॥ ८२ ॥ यस्य भार्या विरुपाक्षि कस्मलिकलहं प्रिय ॥ उन्नरोत्तरादिवसा जग नजर जरा ॥ ८३ ॥
 जस्का स्वादिन विरुपाक्षो असुयिक ह रुया उन्वा स्वाभि संग उन्नरोत्तर गरिवा रुन्वा सस्ति स्वादिन ताई नें जरा न भंनु
 ॥ ८३ ॥ यस्य भार्या स्वरुपा यभर्तार यनु गामिनि ॥ नित्यं मधुर भाषिय सारिखा तखिया रिया ॥ ८४ ॥ जस्कि स्वाः
 दिरां भिच्छ स समका वस्य छ सधै मधुर वयन बो ल छे ये लो स्वादिन ताई तक्षि भंनु ॥ ८४ ॥ यस्य भार्या गृहे
 नित्यं सुनिव परिगर्जति ॥ तस्या सिदति गात्रा निष चानि वहि मातये ॥ ८५ ॥ जस्कि स्वादिन ले नित्य कु कुर भुक्ता रै ग
 र्ज छे तस्को सरि रीदर सु क छ क स्वभन्या तु सार ले पि छा का क म त सु क्ता ज स्तो हुं छ ॥ ८५ ॥ यस्य गृहेषु भाभा
 र्या यमा ते वहित कारिनि ॥ वरुं ने तस्य गात्रा नि सु क्त प स यथा स सि ॥ ८६ ॥ जस्का मह नारि ले हा त ग दी रै ध
 र मा हा ज स्का जो ई ले हित गं छे तस्को सरि र सु क्त प स को यै द मा वृद्धि रु दारै रै वृद्धि मा रा हुं छ ॥ ८६ ॥ किं
 जा ते वरु धि पु त्रै सो क सं ता प कार कै ॥ वरं मे कं कु ता त वि यत्र वि प्र म ते कु लं ॥ ८७ ॥ स ता उन्वा छो रा व हु त भ यो

नकागर्नुकुलकोसपुतभयासेकैछतपनिठेरहुंछं॥८॥ एकभायीवयंपुत्रादेहलोदमधेनव॥कंसाका
 लावसानेपिनतैयास्यतिविक्रिया॥॥एकगोडाजोईदंतिनगोडाछोरोदुईजोरहत्तहसगोटिदुहरिगागाईप
 छिवाटएकगोटिछोरिएतिसंजुक्रभयादुषपदैन॥८८॥यष्टयावहवपुत्रागयामेकोपदिवुजेतु॥ज
 गतव्यासवेधेननिलेवावृषमुत्सजेतु॥॥ठेरैछोराभयासायकछोरागयाजाईपिंडीदयाअस्यमेध राम
 जगगयाकोपुंनिलवृषभंदानगयाकोपुनपाउछं॥८९॥ऐकेरासुधुवृषनदहेमानेनवंहिना॥८॥२३॥
 हेतेनऊरांसर्वकुपुत्रेराकुलंयथा॥॥एकसुक्याकोवृषमाआगोलाग्दासवैवनडुदछतस्तेकुपु
 यंलेकुलकोरासगई॥९०॥कंसेकेरापिसुसुप्रवृषेनपुष्यतेनसुगंधिना॥वासितेऊनंसर्वसपुत्रेराकु
 लंयथा॥॥यकवृषमासंगधकुलछरसवैवनवासनाआउछतस्तेसपुतलेकुलकोउद्धारगई॥९१॥
 यस्यपुत्रावसाभृत्यभायीछंदानुगाभिनि॥विभवेष्टापिसंनुष्टसोर्गतस्यामदितले॥॥जस्काछोराक

माराकमारिस्थाद्वयस्यछधनधांन्यापनिछतसोर्गवेहितो॥९२॥संजिवतिवस्यजिवतिजिवंतिवि
 पुनांप्रबंधवा॥सफलंजिवितंतस्यआनमार्थकोनजिवति॥॥जस्काजिंदावाहाराकनमिधलाउछ
 तस्कोजंमलियाकोसाफलहोआफुजिवताकोपातदैन॥९३॥यपुत्रास्तेपितुवस्यास्यपितापदुपोषकं॥
 तस्मिंयंत्रविद्यापसाभायीयंत्रनिवृति॥॥वावुकावस्यमारहयाजोछउछोरोपातन्यापोह्याकनवावुभंनुज
 स्तेउविस्वागयाकोरहंछस्योमिधहोजोआफुवस्यछत्योस्थादिनहो॥९४॥सजिवतिगुणावस्ययस्यधर्मस
 जिवति॥गुणाधर्मविहितस्यनिष्फलंतस्यजिवितं॥॥गुणाधर्महयामनुष्यकनजिंदोछभंनुगुलापनिधर्मप
 नितहयामनुष्यकनमयाजतिकोछभंनु॥९५॥वावासरत्यतियस्यभायीरुपवतितपोथा॥तस्मिंतुमाग
 वतियस्यसफलंतस्यजिवितं॥॥जस्कामुषमासरत्यतिछंदानगरीसमर्थकोतस्मिंछंदरमाहासुंद
 रिछनजियाकोसाफल्यहो॥९६॥धर्मार्थकाममोक्षाप्रपस्यकोपिनविप्रते॥अजागरत्यरत्यपिनिर्धृतस्य

जिपिते ॥ ॥ धर्मसंयमार्थकाममोक्षयेति वारमाहा एकै ननु त्यागन्या मनुष्याजिघाको निष्कल हो ॥ १८ ॥ धर्मस
त्यविहिता यदि न संति विविकृया ॥ सतो हकारवस्तस्य स्वयं वैव पुजियते ॥ ॥ धर्मसत्य न भयाको मनुष्या को आ
युवेथे जो हं कत्व भया फला म्या भाडो धिहिदा है जो हं ॥ १९ ॥ सत्रोरधिगुरा बाबा दोषा बाबा गुरोरधि ॥ युक्ता
युक्तं यवा गत्वं नवदोगुरु गौरवा ॥ ॥ गुरा को रं कुरा ता स बुको धनि गर्नु दोष का कुरा गुरु को धनि न गर्नु यो गुरा राम
को कुरा माहा गुरु को धनि सर्मन मांनु ॥ २० ॥ अर्तं व्यं न कर्तं व्यं प्रारो कं है गते रधि ॥ कर्तं व्यं मेव कर्तं व्यं प्रारो कं है ॥ २१ ॥
गते रधि ॥ ॥ न गर्नु काम प्राणा छत मा धनि न गर्नु गर्नु काम प्राणा छुट्या धनि गर्नु ॥ २०० ॥ इति श्री वान के सा सं
यते दुनिय सत क स मा प्रं ॥ २ ॥ काले यरि पुना संधि काले यमि व विगते ॥ कार्य कारणा मा भूत्य काले सपति पंडि
त ॥ ॥ वेला हेरि स बुसित मिल नु वेला हेरि मि वसित विरोध गर्नु कार्य को हेनु ग्यानि जन ले समय का दृष्ट ॥
॥ १ ॥ कालं पयति भुता रि काल सहर ते पुजा ॥ कालं सुप्रे पुजा गती कारो हि दुरति क्रम ॥ ॥ काला ले पारिग

25

07

15

10

5

पकाउछकाललै पुजाहर्नुगछैसुत्यापनिकालजागिरहँछतस्कारालेकालहुतोछ॥२॥ कालासुसाह
तेवाजेफलंकालतपुवर्तते॥ कालपुवर्द्धतेश्रुष्टिकालोहिलोककसंहरेनु॥ ॥ कालैविजरोपछंकालै
उछनकालैश्रुष्टिगछैनुकालैफलाउछंकालैलेसहारपनिगछैनु॥३॥ यदिसोभुमिराप
सारमारुता॥ सर्वसंसहरतेकालंतस्कारनकालोमचरे॥ ॥ आकासदिसाभुमिबंदसुथेअजग्निवायुस
वैकारंतलेहँछतस्कारनलेकालवडोछ॥४॥ किंकरिष्यतिवक्रावभोतायत्रनविद्यते॥ नग्नस्यपराक
शामेरजकंकिंकरिष्यति॥ ॥ केहिकथाहासुनुनजायाकाहाउमावोलाउन्माहककोक्यापुयोजनछक
स्यभयानागाकादेसमाधोविकोक्यापुयोजनछ॥५॥ कदलिवनमध्यस्थोवंहिसंदपराक्रम॥ अविग
जनस्थानेगुणावांकिंप्रयोजनं॥ ॥ केराकावनमाहजसैअग्निकापराक्रमकेहिलागैनतले
राभयाकाहाउमागुराजनकोकेहिलागैन॥६॥ प्रलयेभिन्नमजीदाभयानिकितसागरा॥७॥ रा

15

10

57

भेदमिच्छन्तिपुत्रेपिनसाधवा ॥ ॥ यतिगर्भयतिगर्भभयाकोसाधताईभंनुपातेकालमाहासमुद्रलेपनिम
 जीदालंघनागर्हसाधुजनलेमात्रैमजीदाकहितेपनिउददेनं ॥ ७॥ मेरुप्ररतिकलपातेमजीदा
 सागरस्यव ॥ पुतिपंनमाहासत्यानवरतिकदायन ॥ ॥ पातेकालमाहासमेरुपर्वतपनिगुंदगमागा
 उच्छंसमुद्रलेपनिमजीदालंघनागर्हसाधुजनलेमात्रैदुषसुषमापनिकुमारीवलदेनं ॥ ८॥ विज्ञाते
 शिवपुत्रपयोविश्रमवृत्तरोतप ॥ पालरव्यविप्रतेनिवेदयासाधुषुविप्रते ॥ ॥ स्वादिनैउयंयत
 हुंछपात्रराछेउतपहुंछनिवछेउकुदयाहुंछसाधुछेउदयाहुंछ ॥ ९॥ साधुसंन्यानमात्रैनभवंति
 देहविक्रम ॥ उपकारेसतेनापिदुर्जनकेनगृह्यते ॥ ॥ साधुजनराछेउहातजोरनिमात्रैआफुहुंछेदु
 र्जनताईसयउपकारगयापतिआफुहुंछेनं ॥ १०॥ धुधवोधपनिसात्वारिनामुधोसाखवोधयेतु
 पुतेस्यवकृतेदिपेवसुहिनोनयस्यति ॥ ॥ ग्यानिकनसारवलेधुआउनुहुंछमुधिताईहुंछेनकत्व

भयापुतस्यवातिवात्प्याकोअंधलेदेसदैनंसतलैहुंछ ॥ ११॥ नारिकेलफलाका लाहस्यतेकेपिस
 र्जना ॥ अंमपिवदलाकातावहिरेवमनोरमा ॥ ॥ सर्जनभयाकोवाहिरषप्रोभिउमसिनानरिवल
 जस्तादुर्जनभयाकावाहिरांमोभिउषप्रोवपरजस्ता ॥ १२॥ वंदनंसितलंवंददंदनेननुवंदमा ॥
 वंदुवंदनयोर्मध्यसाधुसपकंसितलं ॥ ॥ सितलभयाकाभीघंडसितलवंदमासितलयोदुर्भंदा
 साधुजनकोसंगवह्नुसितल ॥ १३॥ अधमाधनमिच्छन्तिपुतिमिच्छन्तिमध्यमा ॥ हतमासानमि
 छन्तिमतिमिच्छन्तिसाधुव ॥ ॥ अधममनुष्यलेधनकोईसागर्हमध्यममनुष्यलेपुतिकोईसा
 गर्हउतमजनलेमानकोईसागर्हसाधुजनलेसाधुकोईसागर्ह ॥ १४॥ मदिक्कावुरामिच्छन्तिध
 नमिच्छन्तिपाणिवा ॥ निपाकलहमिच्छन्तिसांतिमिच्छन्तिसाधुवा ॥ ॥ किगातेषटिराधाउकोईसा
 गर्हरनालेधनकोईसागर्हनायन्यालेकलहकोईसागर्हसाधुजनलेसांतिकोईसागर्ह ॥ १५॥

ईत रावार्थमिच्छतिरूपमिच्छतिदारिका ॥ ग्यातयकुलमिच्छतिस्वर्गमिच्छतिपातसा ॥ सवेतेधनलो
 ईसागर्हकेटिहस्तलेरूपकोईसागर्हग्यानिगोत्रहस्तलेकुलवादागर्हतपात्रहस्तलेस्वर्गईसागर्ह
 ॥ १६ ॥ अतिल्लेमेनपदवांअतिल्लेमेनयत्तुमुषं ॥ परपिडावयावृत्तिनैवसाधुषुविद्यते ॥ वडाकष्टलेधराम
 नकमाउनुलोभलेसुषगर्नुपरपिडादिनुरेतिथोकसाधुछेउहुदेन ॥ १७ ॥ नसकागरभेसागपअकीर्यी ॥ १८ ॥
 नैवकारयेतु ॥ कंस्यकार्यनकार्ययनिस्फुल्लनैवसेवयत्तु ॥ सर्जनहस्तलेनसकाकोकार्यआरंभग
 देंनलोभंदेवायापनिकुकरमगर्देननिबकापगर्देननिस्फुल्लहुन्याडाउमासेवागर्देन ॥ १९ ॥ सेतेसे
 लेनमानिक्यमौक्तिकंनगडोगजे ॥ साधुयो नहिसर्वत्रुंदनेनवनेवने ॥ सवेवर्तमापानिक्याहुदेनस
 वेहातिकासस्तकमासोतिहुदेनवैडाउमासाधुजनहुदेनसवेवनमाभीषंडहुदेन ॥ २० ॥ परकार्ययुयुक्ता
 मास्यकार्येष्वपुसाधयत्तु ॥ सुहृत्कार्येषुयुंकांमांजावृत्तिराजाकार्येषुविक्रम ॥ पराईकाकार्यमायुक्ति

लाउनुआप्राकार्यपरकोसिद्धिगर्नुमिषकोकार्यमांवंलंनिस्वयगर्नुराजाकोकार्यमावल्ललाउनुरेस्तो
 कार्यसाधुजनकोहो ॥ २० ॥ जसलेषेवनिधानायतकुतंतनदस्यते ॥ अयलंपपिसाधुनांसिलातेषेवति
 वृत्ति ॥ निवजनलाईकतिउपकारगयापनिदेष्टेरांनिवजनलेगयाकोकामपानिमातेष्याकोजस्तो
 साधुजनलेगयाकोकामछंगाभाहलेष्याकोजस्तोजंमजंममेदिदेन ॥ २१ ॥ महतासायदसंतिमहतामेव
 संघद ॥ ईतरेवमनुष्याषुनादोनेसंपद ॥ वडापुरुषलाईसुषपनिछेरैदुषपनिछेरैअरुमनुष्यालाईसु
 षंपनिथोरोदुषपनिथोरो ॥ २२ ॥ सम्पुस्वरूपतिअर्केनवरुदोषेरायंदमा ॥ विदुस्वरूपमावेनमहा
 तोकरसंयुते ॥ आककोफलफुल्लवहायासाहादेवसंनुष्टुहंछंवरुसेसेषलेयंदमासंनुष्टुहंछंस्वर
 रासावलेविदुसंनुष्टुहंछंवडापुरुषलाईअंजलिवाधिनमस्कारगदीसंनुष्टुहंछं ॥ २३ ॥ लेवक
 पाठकप्रेवयोवांसासवितका ॥ सर्वेव्यासनिनोमुधाकृपावंतप्रयंदित ॥ लेषन्यापहुन्याघांइ

तल्लिलेलेषताकोपहताकोअभ्यासमात्रैलेहंछकामवुद्धदेनधासनिभंनुजोकासवुद्धदछनवनि
 यैगह्छतवनिसेपंडितभंनु॥२४॥जिंजोहिसामस्यवारिकंराजसेवातयोवनं॥धिराग्न्यारि
 र्वतिकातराकृषिवाहका॥॥हिरामोतिकोवेपारराजाकोतपवनतपस्यधोराकोवेपारकायोधारकाय
 ग्यानिजनतेगतीहंकातरजनतेवेतिगर्नु॥२५॥वृष्यधनार्थिवाग्नियंविद्याधिद्वंद्वभुतं॥मनु
 कातेमपत्यार्थिवाग्न्यानुपतिवृजेनु॥॥धनकोईसाग्न्यालेवेपारगर्नुविद्याईसाग्न्यालेव॥२६॥
 हुनैकासाखयाअभ्यासगर्नुछोराकाईसाग्न्यालेरिनुकालमाहासंभोगगर्नुमानकोईसाग्न्या
 लेराजाकोसेवागर्नु॥२६॥मुखपदलाकारंवायावंदनसितलं॥हृदयकनसंयुक्तंविद्यंधु
 र्त्तलस्यरा॥॥कमलकाफलरैमुखय्यालोहंछकीषंडजस्तोपाक्यासितलंहंछहृदयकर्त
 नाजस्तोहंछतेस्तालस्यनकाकनधुर्त्तभंनु॥२७॥दुर्जनप्रियवादिद्वंद्वनैविष्यासकारणं॥मधु

अवतिजिदूगेहृदिहालाहलंविषं॥॥जिभागुलियोहंछपियारोववनवोलहृदिस्यासरहदेनहृद
 यमाविहंछतेस्ताकनदुर्जनभंनु॥२८॥धरंघर्षमाशरिपरिहृदुरिपस्यति॥आतमनोवित्वासा
 यानिपस्यतेपिनपस्यति॥॥दुर्जनभयाकोअरुकोभयाराजाजोविशयाकोदेघहंआफुभया
 वेतजोविशयाकोदेघहंदेघापनिनदेघाभैरहं॥२९॥दर्शनियाप्रयमुर्वाधनवैप्रनिर्गु
 रा॥दुरस्थोपिबहस्यतिकंसुकाईवपुष्पिका॥॥देघनाकारंमोधनवतपंडितहृदगुराग्यानन
 भयाकासुर्वहेरुदेघनाकारंमोकस्यभयासुवासनभयाकोपलासकाफलजस्ताहुन॥३०॥मुख
 पिपरिहर्तयपुन्यशोद्विपदपसु॥भिद्यतेवाक्यसत्पाराआदृष्टकंठकोयथा॥॥मुखजातिको
 पुसंगगर्नुहैनमुखरपसुवरोवरिहंकस्यभयाविष्ठाकोकाहोलेदुषदियाहंदुषदिहं॥३१॥
 सप्यंकरषलकूरसप्यंनुकुरतरषलं॥यंशोधिवसप्यंमलकेनोपसोभ्यते॥॥सप्यंपनिदुष्ट

होदुर्जनपतिदुष्टहोसर्वतामंत्रऔषधितेवस्यगर्नुहंछदुर्जनभयाको कहिलेवस्यगर्नुहंदेन॥३॥
 हस्तिनाकुं सहस्तेन कदिहस्तेन वाजिनं॥ मृगिणोत्तंगतहस्तेन घडगहस्ते रादुर्जन॥ अंकुसलेहा
 तिवस्यगर्नुवाधुकलेघोरवस्यगर्नुतोहातेसिगह्यात्ताईवस्यगर्नुघडगदेघाईदुर्जनताईवस्य
 गर्नु॥३॥ हस्तिहस्तसहमेरासतहस्तेरावाजिनं॥ मृगिणोदसहस्तेन देगत्यागेरादुर्जन॥ हाति १॥
 देघिहजारहातफराकरहनुघोरदेघिसयहातफराकरहनुसिंघह्यादेघिदसहातफराकरहनुदुर्जन ॥२८॥
 नदेघिदेसैछाडनु॥३४॥ दुर्जनपरिहर्तव्यंसारवेनातकृतोपादि॥ मरिणानातकृतं सर्वकिमसो नभ
 यंकरं॥ पंडितछतपतिदुर्जनभयातस्कोपसंगनगर्नुतसदेघिडरागुनुकस्वभयापनिभयापनि
 सर्वदेघिडरागुनु॥३५॥ पात्रापात्रविसेषेन धेनुपंननयोयथा॥ तृणानि प्रवृत्तेष्वारं प्रारणानि प्रवृत्ते
 विषं॥ गाईनृणां हि दुददिं ह्यसर्वते दुदघां हि विषदिं ह्यसुपात्रकुपात्रको फेरहं छ ॥३६॥ दुद

सवुधितिमत्यानापेक्षेराकदावरा॥ कलेदुर्जनमासांतिनृणास्थवंहिविजवतु॥ सान्स्वदुहृत
 परिहेतानगर्नुकसोभयासुकाकोकयारमाहाअग्निमानुछतपनिजोहिघरसतकंछरभ
 स्पपाई॥३७॥ षष्टिकेकरकेदोषाअसितिमधुपिंगले॥ सतंकारोवघोदेनकुभ्रुस्यातंनिगयते॥
 डेराछेउसाहिदोषहंछकुईयाछेउअसिदोषहंछकानाछेउसयदोषहंछकुवाछेउगुसंघदोषहं
 छ॥३८॥ स्थानेकुदेदुराग्योरोपिउत्तेहंपरित्यया॥ विप्रवासंसमयकार्यविनासनुपगच्छति॥
 दरवारवस्छआफुदुर्जनछतस्छेउविस्थासनगर्नुविस्थासवातभयाउत्पंनहंछ॥३९॥ मृदुनैव
 मृदुहतिमृदुनाहतिदारुण॥ असाध्यमृदुनाकिचित्तस्यातिस्पनतोमृदु॥ कवलातेसाहाव
 भिकादछछिरोपभिकादछकवलातेसिधिनभयाकोकेहिछैनसर्वेहाहिलाग्यावतहो॥४०॥
 धनेपुगुलितोवंहिदहनमुत्तानिलस॥ समुहमुत्तंयतिआपोषोमृदुसिततं॥ अगनिभया

कोसाहोहोऽहोलातोलागूरभस्मपाई तैपनिजलाताराधस्वपाणिभयाकोकवलोषोलाहे
 उकोरुषषोलातेजलमुलगरिवगावुछनरजलापतिराधैन॥४१॥स्युतरोमावलिवाधंकेया
 वववहुभाषिनि॥वषराणिबध्नेजानिदुरनपरिवर्जयनु॥४२॥वडाहोरोभयाकोगोस्वहुतैकु राग
 पीकेटिरुषोभुमिईनकोपुसंगनगनु॥४३॥रहस्यधेदमैपुन्यापरदोषानुकिर्तन॥कलहापुकु
 तिवैवदुरनवापिवर्जयनु॥४४॥मित्रकाकुरावाहिरतैजायालिदारभयाकोदोषगावु
 हुन्याऐसाकोपुसंगनगनु॥४५॥अस्यपानंगजोभूतोगावधैवपुसुनिकां॥तथाबांतपुरोदासि
 दुरनपरिवर्जयनु॥४६॥फुकोछोरोमदह्याकोहानिभर्षरीविद्यासाकिगाईदरवारकोकेटिएतिवस्तु
 देधिपरगैरहनु॥४७॥दुर्जनंयसदामित्रंवरस्याभिरनारिवय॥गोजिरीवदुरनपरिवर्जयनु॥४८॥
 दुर्जनकोपुनिपरपुरुषकोपुसंगनगयोभरिवुडिगाईपुरासायानकपराएतिवस्तुताईछा

डिदिनु॥४९॥नविस्वसेदंमित्रस्यमित्रस्यपिनविस्वसेनु॥कदाचितोकुपितोमित्रंसर्वगुंस्त्रियुसये
 नु॥५०॥वैहिसितपनिविस्वासनगनुमित्रसितपनिविस्वासनगनुकदाचितमित्रफाटीपायाकादिन
 मासवैगुत्सपकासहंछ॥५१॥नविस्वसेदंविस्वासेविप्रवासेनैवविस्वसेनु॥विस्वासाभयमुत्सं
 नमुरानेधनिकुतंति॥५२॥अविस्वासिद्धेउपनिविस्वासनगनुविस्वासिद्धेउपनिविस्वासनगनुवि
 स्वासवातभयाउसंनहंछ॥५३॥नदिनांयनधिनांयभृंगानासस्वपाशाना॥विस्वासनैवकर्तव्यं
 त्रिषुराजकुलेषु॥५४॥नदिनोनधहुन्याकोसिगहुन्याकोहानमाहतिपारहुन्याकोभरिवकीराजाको
 एतिसंगविस्वासनगनु॥५५॥नदितितेयुयोवृक्षायावतारिनिश्रुया॥सांसंतरिहितोरजानभ
 यंतिविरागुष॥५६॥नदितिरकारुषआफ्राआभ्रमकाहितनभयाकोभरिवमंत्रिनभयाकोराजाएति
 जनाठेरषपैन॥५७॥यदिहेतुसास्यतंप्रितिरिनिनवनकारयनु॥५८॥नुतमप्रयुगंयपरोस्यदा

रदसंनं ॥ जल्लाउमासदापितिराखो भयाईतिनयो कनगर्नु नुवानखेतनुलियादियानगर्नु
 हिनरेःकैवत्याकाहाउमानजानु ॥ ५० ॥ नगछेदुष्टविस्वासंनकुर्यस्तुलविग्रहं ॥ आत्मनोपित
 कोधंघिउवैरंकरयतु ॥ ५१ ॥ दुष्टसितविस्वासनगर्नुदुष्टसितरुगरापनिनगर्नुवैहिमिउदुईछेउवि
 स्वासनगर्नु ॥ ५२ ॥ कुरायंमंत्रिराजानाविपुंयविषलिपति ॥ पुवाजिनंवुतंभुष्टनसेवंतिसदावुधै ॥ ५३ ॥
 अंभ्याईमंत्रिह्याराजासुदिनिजोईह्यावाह्यरावुतभंगह्याअतितरतिकोसेवानगर्नु ॥ ५४ ॥ कुम
 चोनसिविस्वासंकुभार्यायांकुतोरात ॥ कुरायनसिनिवृत्तिकुदेसेनासिजावितं ॥ ५५ ॥ कुमंत्रिछेउविस्वा
 सहदेनकुभारिउछेउपुतिहुदेनकुराजेमानिकोपांदेनकुदेसमानिविकाहदेन ॥ ५६ ॥ नासिसपसदा
 दोरेनसोयविषलिपतो ॥ मप्रपेसुहृदंनसिजुनकोरेवयंनहि ॥ ५७ ॥ दोरकोससहदेनसुठिरिउजेई
 ह्यावाह्यरासुविहुदेनमदपिउयाछेउहितहुदेननुवायांछेउतिनैथोकहुदेन ॥ ५८ ॥ धोविपुतिपु

मजिनंउदमेत्योगुरुसिष्ययो ॥ अंतरंनैवकर्तव्यंहरस्यवृषभस्यय ॥ ५९ ॥ दुईवाह्यराकाशुगिच
 ह्यराकादुईजोईकागुरुसिष्यकापाहादेववृषभकार्तिकापाकृवाटनजानु ॥ ६० ॥ लोकजाज
 यंतयादक्षिणोत्पागसिलता ॥ पंयतवनविद्यतैराकुर्यंतवसंगति ॥ ६१ ॥ जल्लाउमा लोकताईय
 राछेनताजछेनभलोछेनवठियाछेनधर्मछेनईपायवस्तुभयाकाहाउयासंगरागर्नु ॥ ६२ ॥
 नाजनेसुत्कतायातिनेवकत्यवहुभ्रतं ॥ गाजतसेतोहुदेनविकल्पमनहुदेनमानिसकोपहुनुमं
 पनिहुदेरास्यादिछेउधिरवुधिहुदेनमुषेछेउसत्कृतगनिहुदेन ॥ ६३ ॥ रिरासेषागिनसेष
 व्याधिसेधंसतयेवय ॥ पुरावर्द्धयतेतस्यतस्माद्धेधनकारमनु ॥ ६४ ॥ रिराकोसेषअगिनकोसे
 षयाधिकोसेषरतिकोसेखनराषनुफेरिवर्द्धछ ॥ ६५ ॥ उदेवाकलहकरादुपुनमध्यपरवि
 य ॥ निंदामेथुरामातस्यसेवतेतेहिवर्द्धरा ॥ ६६ ॥ हस्यतकराउनुनुवाखेतनुमदपिउनुपरवि

गमनशिरां दामैयुगगुलसिहेतिथोककोसेवानगर्नु॥५॥ परदारपरस्यपरिवाहपरस्य
 व॥ परिहास्यंगुहस्थानेयतनतयपरिवर्जयनु॥ ॥ परसिपरधनपरममपरनिद्रायेतिथोक
 गुरुस्थानमारागर्नु॥६॥ परिशकार्यहंतारंपुत्यसपिपयादिन॥ वनेयंतादस्यमित्रविरा
 कुंभययोमुखं॥ ॥ कंठापरिहान्यामुरव्याजिमिहोगरिवोत्तयास्यकोमित्रसंगनगर्नुविषः॥३५॥
 लेभयाकागागाकामुधमादुदलेठाक्याजस्तोहं॥६॥ कुदेसंयकुवृत्तिवकुभार्याकुनदिस
 था॥ कुदयंयकुभोयंयवर्जयतपदितसदा॥ ॥ कुदेसकुकर्मगर्वाहाउकुलनकिस्वादिनअस
 धनदेकुदयकुभययेतिथोकग्यानिजनलेछाडनु॥६॥ उर्वसियदितपेतरंभायदिति
 तोत्रमा॥ गोपालिमैनकाप्येववर्जनियापरिचय॥ ॥ उर्वसिरंभातिलोतमागोपालिषमेव
 कार्त्तनिरुजतिरुपयतिभयापनिपरसिहकोपसंगनगर्नु॥६॥ यषुकार्येषुयुंकोतमाव

देषुसहसाविफलोदय॥ विपतिषुमाहादोषपरिवर्त्यद्वियशरा॥ ॥ आफुलेआरंभगयाकोक
 यंअकीलेहारोविगारिदियोतपनिउत्तार्त्तविपदाआफुकर्त्यसिद्धन्याभयापनिग्यानिजनले
 हांनुहेनविपतिमाहात्याकोवडोदोष॥६॥ भक्तभक्तसमंपस्याकार्यकार्ययतुत्यता॥ सदाका
 र्येषुसदेहाभेतयंसवदीवुधे॥ ॥ भक्तभक्तहेरिकाभलोमंदोकार्यताउनुकार्यगदीडरमानिग
 र्नु॥६॥ भेतयंकुलिनानाराजापरोपजिविनां॥ भेतयंग्यातसवुराकुहापूर्वमकरिरां॥ ॥ उयनि
 यकाकमार्त्तान्याराजादेधिडराउनुयोग्यआक्रममंजांन्यासनुदेधिडराउनुयाहिं॥६॥ पादपा
 राभयंवातपशानासिसिरोभयं॥ पर्वतातांभयंवजोजंतुनांछिपदीभयं॥ ॥ वृक्षकोभयवायु
 कमतकोभयतुसारोपर्वतकोभयवजुजिवांजंतुकोभयसनुयो॥६॥ मातायदिविषंदुष्टानु
 पिताविकृतेसुते॥ राजाकरोतिशांन्यायंकोमेवाताभविष्यति॥ ॥ आमातेविषदिदावावृत्तेवेवनु

जापुरुषकोसोभावासुसिल॥३३॥महतापरिभवन्मेखंननिदि॥३४॥कंसारिपादद्याटे
 राकालिपस्यविभुषण॥३५॥वडाकोलाटनिकोयकोमानननिकोकस्वभन्नाश्रीकृष्णलेकातिनाग
 काकपालमातादमारिवस्ताकालिनागकोकसोभाभयोथ्यो॥३६॥सुविभुमिगततोयंसुविना राम
 रिपतिवृता॥सुविष्येमकरोराजासंनौषोधास्त्ररासुवि॥३७॥धर्तिमाहापाणिभयाकोहानुसुविप्रति॥३८॥
 वृताभरिवसुविष्यमावंतराजासुविसंतोषिधास्त्ररासुवि॥३९॥सुविभुमिगततोयंसुविनेपोनवि
 श्वने॥पैलेपस्थानंपरित्यज्यअन्यस्थानेसुविसुवि॥४०॥तिथ्याकोभुमिसुविमनुष्यलेवगायाको
 पभभसुविआफेवगायाकोपाजिसुविमाणिकोसुवि॥४१॥भस्मनासुद्धनेकासंतोमुमेनसुध
 ॥४२॥नसासुधनेनारिजदिवेनेरासुधपति॥४३॥धरजिलेकासासुद्धहंछअधितालेतायोसु
 हंछभनुनोह्वातलेअरिवसुद्धहंछवेगलेवज्ञानदिसुद्धहंछ॥४४॥पिनुरंनुपुरंदशानुमा

ज्ञातमहानस॥गोषुवात्तमसमंदशानुस्वयमेवकृषिबुजेनु॥४५॥वायुकाअर्जिलिनुआमाकासा
 धानुगोरुकोजिवआकुरजिवरेकेजिवमानुआकुलेवेतिगर्नु॥४६॥कपिलाश्वारवानेराबुंदरा
 गमनेनव॥वेदाश्वरविशारेनससुदनरकंभुजेनु॥४७॥सुदलेकेतागार्ईकोदुदपियावाहलोवपुसग
 गमावेदकोविशारगमासुदनरकंपर्छ॥४८॥अद्रिहस्तेनयोभुक्तेमासमेकंतिरंतरं॥जिवेमासोभवे
 हृदोमूनस्थानप्रजायते॥४९॥धास्त्ररालेअधंदितगरिणकेमहिहासंमसुदिनिकाहातवाएवादे
 धिजिवंजिवसुदभयोममापदिकुकुकोजंयहंछ॥५०॥स्तनहिनस्तुयोनारिधुतहिनंभोजनं॥
 वस्त्रहिनंमलंकारविश्राहिनंदिजोतमं॥५१॥दुदनभयाकिस्त्राहिनंभयाकोभोजवस्त्रहिनकोग
 हमाविश्राहिनभयाकोउतमवाह्यराऐतिथीकसुहाउदैत॥५२॥सोभतेसलिलेपद्येसोभतेदिष
 तोदिज॥सोभतेतवस्यापुकोवृणंसुदस्यसोभते॥५३॥पारिपाठिकमतकोसोभायादुकावावगु

पाहिको सोभा न पस्या लेवा हरा को सोभा समय सेर का धाउ ले सु दु को सोभा ॥ ८६ ॥ य गो न स व
 वं विप्रा नां मुखा ना कल होत स वं ॥ पुरुषो न स वं नारिणा ग वा नां वतु लो न स वं ॥ ॥ वा हरा को मं
 गल ज न मु र्ख को मं गल कल ह अरि को मं गल व स म गार्द को मं गल प र ल द्या स ॥ ८७ ॥ अग्नि हो
 तं फलं वेद सित वृत्ति फलं प्र तं ॥ पति पुत्र फला नारि द त भु क्त फलं धनं ॥ ॥ वेद को फल अग्नि हो त
 कथा हा सु न्या को फल सं तो ष सित व द्नु अरि को पु सं ग ग न्या को फल छो रो ध न को फल दान भो ।
 ग ॥ ८८ ॥ अग्नि द हति ता पे न सु र्यो द हति र स मि मि ॥ राजा द हति दं दे रा त प सा वा हरो द हे न ॥ ॥ अ
 ग्निका ते ज ले पो ल छ सु र्य का किर न ले पो ल छ राजा का डं रा ड ले षो पो ल छ वा हरा का त प स्या ले पो
 ल छ ॥ ८९ ॥ स न सा कं म नं मा सं क ले रा म धि तं द धि ॥ न र्जं त्या दं त ध र्ष षु तु त्यं गो मा स भ श्य रां ॥ ॥
 सा ना को सं ग म या का को मा सु हा त ले वि रो त्पा को द हित र्ज नि भं गु लि ले दं त ध द्नु र्ज नि षो क या सं

छ ज ना ता र्ज ॥ ९० ॥ सु धू मा सं रि यो वृ धा वा ता र्क त ह रां द धि ॥ पु भा ते मै षु रां नि स द्वा रा ॥ ॥
 नि ष द् ॥ ॥ सु क्का को मा सु धा नु वृ ठि ग्गु रि व पु सं ग ग र्नु वि हा न को धा म ना प नु न ह रा द हि धा नु वि द्या
 या र्ध छ मै षु रा ग र्नु निं दा ग र्नु र्ज नि छ षो क ले पा रा धा र कु ग र्जो हुं न ॥ ९१ ॥ स द्वा मा सं धू तं स द्वा
 धा न रि व छि र भो ज नं ॥ उ द्दो द क न ह छा या स द्वा रा का क रा नि ष द् ॥ ॥ आ लो मा सु आ लो धिं दु द मा
 त ना लो पा नि ह ष को छा या ध ति छ षो क ले पा रा र द्या हुं छ ॥ ९२ ॥ आ ना द द्वा गु रां पि र्धि पि र्धि द द्वा गु रां
 प ये ॥ प य स द्वा गु रां मा स मा स द द्वा गु रां धू तं ॥ ॥ भा त भं दा आ ठ गु रा व त रो टि मा छ रो टि भं दा आ ठ
 गु रा व त दु द मा छ दु द भं दा आ ठ गु रा व त मा सु मा र्द मा सु भं दा आ ठ गु रा व त धिं मा छ ॥ ९३ ॥ गं र्धि
 पु वि न स्य नि स को लु क षु यो न र ॥ अ भि मा नि ष का मि ष गु नु द्दे षि स ये व व ॥ ॥ अ हं का र्क तो
 त मा न षो ज न्या का मा नु र गु र्दो हि र्वा य ज ना को सो र क ना स हुं छ ॥ ९४ ॥ गो भि र्धि पौ ष वे दे

नुत्यहनु ॥ २० ॥ नहं यनमनिंदया नुहं यमानेन दस्यते ॥ यत्र संकापरित्यया भक्षमासंयुधिधिर
 आपुलेनमानुअकीताईववनरादिनुकादतानहेनुईतिछाडिकनमासुषायापमिरिदोषद्वैरा
 निकीकृत्स्नते जुधिधिरराजाछेउआग्यागर्दाभया ॥ २१ ॥ नमासंभक्षनंदोषेनममनवमैथुरां ॥ पु
 धुतिरेवभुतानानिवृत्तिस्तुमाहाफलं ॥ ॥ मासुषायापनिदोषद्वैरनमदपियापनिदोषद्वैराअरिजोपु
 संगगयापनिदोषद्वैराप्राणिजोसोभावयावहारहंतैतेनरलेतिवस्तुत्ताईछाडिदियावडोपुन्यछ ॥ २
 वनुसागरपथीतयोदज्ञानपृथिविभिमां ॥ नषादेवपियोमांसंनुत्यमेतधिदुर्वृथा ॥ ॥ समुद्रकावारद
 दधिवपृथिविदानगयाकोरमाछामासुनषायाकोवरगेवरफलहंछग्यानिजनतेकुलनु ॥ २३ ॥ ग्पु
 निनरापरिवयोमुखीसर्पराजकुलानिद ॥ नित्यमेवोपचारेनसप्रप्राणहरानिषद ॥ ॥ अग्निअरिज
 तमुखसर्पराजाएतिसितषवरदारगरिरहनुकेहिजाजोविग्यापरकुमाजिवंजांछंप्राणहराभंनुने

[illegible]

